प्रथम अध्याय

कमलेश्वर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय

कमलेश्वर : व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व

१) **व्यक्तित्व**

१.१.१ जन्म

१.१.२ जन्मस्थान

१.१.३ कमलेश्वर का पुरानाम

१.१.४ शिक्षा

१.१.५ माता-पिता

१.१.६ पारिवारिक स्थिति

१.१.७ वंश एवं परिवार

१.१.८ कमलेश्वर के जीवन में संघर्ष

अ) बाल्य अवस्था

आ) किशोर अवस्था

इ) युवा अवस्था

ई) प्रौढ अवस्था

उ) गृहस्थी जीवन

ऊ) अजीविका

१.१.९ साहित्यिक प्रेरणा

१.१.१० पुरस्कार/सम्मान

१.१.११ अन्य फुटकर कार्य

अ) सेवा

आ) हॉबी

इ) फिल्म और संवाद

ई) व्यंग्य और विनोदप्रियता

उ) विद्रोही प्रवृत्ती एवं निर्भिकता

ऊ) बहु अयामी

ए) कर्मठता

ऐ) सच्चा हमदम और दोस्त

१.१.१२ परिस्थितियाँ एवं परिवेश

अ) राजनीतिक

आ) सामाजिक

इ) आर्थिक

ई) धार्मिक एवं सांस्कृतिक

२) कृतित्व

१.२.१ संपादक कमलेश्वर

१.२.२ कहानीकार कमलेश्वर

अ) राजा निरबंसिया

आ) कसबे का आदमी

इ) खोई हुई दिशाये

ई) दस प्रतिनिधी कहानियाँ

१.२.३ उपन्यासकार कमलेश्वर

अ) एक सडक सत्तावन गलियाँ

आ) डाग बंगला

इ) लौटे हुवे मुसाफिर

ई) तिसरा आदमी

उ) समुद्र में खोया हुवा आदमी

ऊ) काली आँधी

ए) आगामे आतित

ऐ) एक और चंद्रकांता

ओ) कितने पाकिस्तान

१.२.४ नाटक साहित्य और कमलेश्वर

अ) दर्पण, भारतीय भाषाओंकि चुनी हुवी कहानीओं का नाट्य रुपांतर

१.२.५ आकाशवाणी और दूरदर्शन : कमलेश्वर

१.२.६ हिन्दी फिल्म और कमलेश्वर

१.२.७ समिक्षक कमलेश्वर

१.२.८ यात्रावृत्त और कमलेश्वर

अ) कश्मीर : रात के बाद

१.२.९ संस्मरण और कमलेश्वर

अ) अपनी निगाह में

१.२.१० कमलेश्वर का आत्मकथा साहित्य

अ) जो मैंने जिया

आ) यादो के चिराग

इ) जलती हुई नदी

१.२.११ हिन्दी पत्रकारिता में कमलेश्वर

प्रथम अध्याय

कमलेश्वर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रास्ताविक :-

साहित्यकार का जीवन दर्पण की तरह होता है। उसका व्यक्तित्व जीवन में आए हुए अनुभवोंसे बनता और व्यक्तित्व का दर्शन उसकी रचनाओं में प्राप्त होता है।

कमलेश्वरजी का व्यक्तित्त्व हिन्दी कथा साहित्य में लोकप्रिय और बहुचर्चित है। वे आज के बहुचर्चित उपन्यासकार और वरिष्ठ कथाकार हैं। उनके व्यक्तित्त्व के अनेक पहलू हैं। वे कहानीकार, उपन्यासकार, सम्पादक, स्क्रिप्ट रायटर, तथा अलोचक के साथ हिन्दी की संस्मरण, आत्मकथा, यात्रावृत्त, पत्रकार आदि विधाओं में अपनी पहचान बनानेवाले लेखकों में प्रमुख है। सन् १९५० ई. के बाद के श्रेष्ठ कहानीकार ही नहीं बल्कि 'नयी कहानी' और 'समांतर कहानी' में एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। हिन्दी कहानी के विकास में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

कमलेश्वर जी ने आम जनता के दु:ख-दर्द, समस्याओं को अपने साहित्य में स्थान देकर पूँजीपातियों के विरुद्ध में आम जनता की लडाई को उद्घाटित किया है। इस दृष्टि से सम्पादक कमलेश्वर की साहित्यिक सक्रियता और ऊर्जा विख्यात रही है। वे आम जनता के कल्याण के लिए हमेशा कार्यरत रहे हैं। 'मेरा पन्ना' में वे स्वयं लिखते हैं कि, ''कमलेश्वर नाम है निडरता और स्वाभिमान का - जो जन सामान्य के हित के लिए किसीसे भी टकरा सकता है।'' अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं आत्मविश्वासपूर्ण स्वर से साहित्य सृजन के द्वारा सामाजिक यथार्थ को उद्घाटित करते रहे हैं।

कमलेश्वर का जीवन संघर्ष से भरा हुआ होने पर भी अपने असाधारण मनोबल से हमेशा टकराते रहे हैं, लडते रहे हैं। इस विषय में दुष्यंतकुमार जी ने कहा है कि, ''उसकी यह लडाई दो स्तरों पर है - खुद अपने से और अपने समय की विसंगतियों से।'' इसलिए उन्होंने अपने साहित्य की विषयवस्तु सीधे जन-जीवन से प्राप्त की है। अपनी कहानियों तथा उपन्यास में कस्बे से लेकर महानगर तक के आम जनता

के मानव मन की गहराईयों से सूक्ष्म चित्र आँका है । उसका मानना भी है कि अपने साहित्य के पात्र महत्त्वपूर्ण न होकर उसमें रुपयित परिवेश महत्त्वपूर्ण है । इससे यह स्पष्ट होता है कि उनकी वैचारिकता बहुत व्यापक है । इसलिए ही आपके साहित्य का लगभग सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद हो रहा है

१.१.१ जन्म :-

कमलेश्वर का जन्म उत्तर प्रदेश के मैनपुरी कस्बे में सन् ६ जनवरी १९३२ ई. में हुआ है । आपका जन्म एक टूटे तथा बिखरे हुए जमीदारी परिवेश में होने से बचपन आर्थिक विपन्नता में गुजरा है ।

१.१.२ जन्मस्थान :-

कटरा मुहल्ला, मैनपुरी, उत्तर प्रदेश

१.१.३ कमलेश्वर का पुरानामः-

पूरा नाम- 'कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना'

बचपन का नाम- कैलाश

१.१.४ शिक्षा :-

हाईस्कूल 'गवर्नमेंट हाईस्कूल', मैनपुरी १९४६

इंटरमीडियेट, 'के.पी.इंटर कॉलेज', इलाहाबाद, १९५०

एम.ए. (हिन्दी) 'इलाहाबाद विश्वविद्यालय', १९५४

१.१.५ माता-पिता :-

कमलेश्वर जी के पिता का नाम जगदम्बा प्रसाद था । उनके बचपन में ही पिताजी का देहांत हो जाने से पिता का साया सर से उठ गया है । उनके पिता के दो विवाह हुए थे । कमलेश्वर उनके दूसरी पत्नी शान्तीदेवी के सबसे छोटे लडके हैं । आपके बडे भाई का नाम रामेश्वर प्रसाद तथा मंझले का नाम सिद्धार्थ है ।

१.१.६ पारिवारिक स्थिति :-

कमलेश्वर के बचपन में ही पिता की मृत्यु हो जाने से परिवार का बोझ माँ शान्तीदेवी पर पड़ चुका था । पारिवारिक स्थिति गरिब होने कारण अर्थ के अभाव में कडी मेहनत एवं संघर्ष करके आपके माताजी ने परिवार संभाला था । एक उजडी हुई गृहस्थी चलाने की हिम्मत आपके माताजी को परिस्थिति ने दी थी । इसी पारिवारिक स्थिति ने आपको जीवन में हर एक कठिनाई झेलने की शिक्षा दी है, जो आपके जीवन में सफलता हासिल करने के काम आयी है ।

१.१.७ वंश एवं परिवार :-

कमलेश्वर के परिवार में कुल मिलाकर सात भाई थे । सबसे बडे भाई सौतेले थे । उनका नाम द्वारकाप्रसाद सक्सेना थ । कमलेश्वर अपने भाईयों में सबसे छोटे थे। बाकी पाँच भाईयों की मृत्यु हो गई थी । जब कमलेश्वर तीन-चार वर्ष के ही थे कि उनके पिता की मृत्यु हृदयगति रुक जाने से हो गई थी । कमलेश्वर से बडे भाई सिद्धार्थ तब चौथे दर्जे में पढ़ते थे ।

पिता का अभाव उनको अजीवन खलता रहा । यहाँ तक कि बचपन की सूनी दोपहरियों में कुओं में झाँक-झाँककर उन्होंने "बाबूजी! बाबूजी!!" पुकारा । यह पुकार नन्हे कमलेश्वर की आंतरिक वेदना के साथ पितृहीनता की भावना को व्यक्त करती हैं । बडे होने के बाद भी इस दंश से मुक्ति न मिल सकी । यहाँ तक कि उन्होंने

'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास लिखकर एक विकल, प्रतीक्षारता पिता को प्रस्तुत किया । उपन्यास के पिता का पुत्र समुद्र में खो जाता है जो लौटकर अपने पिता के पास नहीं आता । इस प्रकार उपन्यास लिखकर मानों उन्होंने बदला ले लिया । कमलेश्वर के जीवन में उन्हें दूसरा आघात तब लगा जब सिद्धार्थ की असमय मृत्यु हो गई । वैसे तो सबसे बडे भाई की (१८) रुपये मासिक आमदनी पर ही घर का गुजरा हो रहा था; परंतु सिद्धार्थ होनहार था अतः घर के भविष्य के सुनहरे सपने उसी के आधार पर देखे जाते थे । सिद्धार्थ की मृत्यु ने परिवार को पूरी तरह तोड दिया । कमलेश्वर तो विशेष रूप से सिद्धार्थ से जुडे हुए थे । पितृहीनता की ग्रंथि तो थी ही, मातृप्रेम व संरक्षण से भी वे वंचित हो गये। पिता की मृत्यु से कोमल शैशव को आघात पहुँचा तो भाई की मृत्यु से चंचल किशोरावस्था को ।

१.१.८ कमलेश्वर के जीवन में संघर्ष:-

अ) बाल्य अवस्था :-

कमलेश्वर का बचपन मैनपुरी के बडे से मकान में कटरा मुहल्ले में गुजरा । वैसे कहनें को तो जमींदार परिवार था, परंतु घर की अंदरुनी हालत छतों व दीवारों की तरह खस्ता थी । मकानों के दो-दो, तीन-तीन रुपये किरायों के आधार पर (जो प्रायः वक्त पर न मिलते) घर लंगडता चल रहा था । उनका अभावग्रस्त बचपन आर्थिक तनावों से गुजरा । जमीदारी ठाठ के समाप्त हो जाने पर भी, उनकी माँ के द्वारा सामंतीशान को रखने का भरसक प्रयास किया जाता । अपने अभावों को उन्होंने इस प्रकार व्यक्त किया है-

''अमीर कहे जानेवाले घर में गरीब की तरह रहना, खाना खा कर भी भूखा उठना, अकुलाहटभरे दुखों के बीच हंस सकना, बच्चा होते हुए भी वयस्कों की तरह निर्णय ले सकना मेरी मजबूरी बन गई थी ।''[१]

घर की आर्थिक तंगी का अंदाज इससे ही लग जाता है कि मृत भाई

(सिद्धार्थ) के कपडों को काट-काट कर छोटे कपडे कमलेश्वर के लिये बनते । माँ कि धोती की किनारियों से स्कूल का वस्ता बनता । उनके पढने के लिये न नई किताबें होती न कापियाँ । रबड या पैंसिल खरीदने तक के लिये एक आना भी समस्या होता । भूगोल की कक्षा के लिये नक्शा न खरीद पाने के कारण दो-तीन दिन स्कूल से अनुपस्थित रहना, पढने के लिये म्युनिसिपैलिटी की लालटेन से तेल चुराना, स्कूल की फीस जमा न करा सकने के कारण डाँट व अपमान झेलना । यहाँ तक कि अन्य बच्चों को चाट-पकौडी आदि खाते देखकर सिर्फ पानी का गिलास पीकर रह जाना । इन अभावों तथा अपमानों से उनके शैशव का हस्य खो गया । स्कूल, बाजार और दुकानदारों के पक्षपातपूर्ण व्यवहार से बालक कमलेश्वर को ठेस पहुँचती । छमाही परीक्षा में अव्वल आ जाते परंतु वार्षिक परीक्षा में किसी इंस्पैक्टर, तहसीलदार आदि के बच्चे अव्वल आते । **''अव्वल आना मेरे लिए पढ़ाई की दृष्टि से उतने संतोष की बात नहीं थी जितनी कि आर्थिक विवशता के दृष्टिकोण से थी ।''** [२]

इस प्रकार उनके कस्बे मैनपुरी का बाल्यवस्थाकाल, आर्थिक तंगियों से गुजरा । इन तनावग्रस्त दिनों का प्रभाव उनके जीवन पर हमेशा ही रहा ।

आ) किशोर अवस्था :-

कमलेश्वर की किशोरावस्था भी बाल्यवस्था के समान ही संघर्षपूर्ण रही । वे किशोरावस्था के प्रारंभिक वर्ष में मैनपुरी कस्बे से जुडे रहे तो बाद के इलाहाबाद में । १९४६ में हायस्कूल पास करने के पश्चात् कमलेश्वर की माँ ने गांधारी की तरह आँखों पर आंसुओं की पट्टी बाँधकर उन्हें अध्ययंन के लिये मैनपुरी से बाहर भेज दिया । कमलेश्वर के सौतेले भाई उन्हें आगे पढ़ाने के पक्ष में न थे । परंतु माँ ने किराये का धीरे-धीरे जुगाड करके कमलेश्वर को पढ़ने भेज दिया । वे ट्यूशन आदि करके अपनी पढ़ाई जारी रख सके ।

बचपन के अकेलेपन व संघर्षों ने उन्हें संकोची और अन्तर्मुखी बना दिया । परंतु किशोरावस्था में आकर उस विद्रोह ने जो कि बचपन में वैष्णव संस्कारों से दब गया था, जड़ पकडी । उनके भीतरी विद्रोह को दिशा मिली पार्टी से जुडकर । भावुकता और उन्माद की आयु में उनका परिचय मैनपुरी में ही 'क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी' से हो गया था । परंतु इलाहाबाद जाकर भगतसिंह व चंद्रशेखर की उसी पार्टी में वे सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में जुड गये । इस पार्टी के अखबार 'जनक्रांति' में वे शहीदों व क्रांतिकारियों की जीवनगाथाएँ लिखा करते थे । उनका सर्वप्रथम लेख भारतीय क्रांतिकारियों पर 'कामागाता मारू' इस प्रकार कमलेश्वर के मस्तिष्क में किशोरावस्था में ही बामपंथी विचारों का बीजवपन हो गया । उनका पार्टी से जुडने का कारण आर्थिक न था बल्कि उन्हें अर्थपूर्ण जिंदगी जीने की प्रबल इच्छा थी । १९४७ का समय भारत की आजादी और विभाजन का है । इस समय वे जीवन को सार्थकता शरणार्थी कैंपों में रसद पहुँचकर स्वयंसेवक बनकर तथा उनकी सहायता करके महसूस कर रहे थे । इस किशोरावस्था में वे आदर्शो को स्थापित कर रहे थे जो बाद में उनकी प्रारंभिक कहानियों में कथाओं में मुख्य रूप से उभर आए है । इस कच्ची किशोरावस्था में ही वे जीवन की कड़वाहट से परिचित हुए । उन्होंने यथार्थ का पहला सबक यहीं से सीखा । विभाजन के पश्चात् पार्टी के सदस्य दूसरे दलों से मिलकर अपनी सीटें सुरक्षित कराकर पार्टी व कमलेश्वर को अनाथ करके चले गये । पार्टी के लोगों की स्वार्थपरता से वे आहत हुए और उनको जीवन का प्रथम धक्का लगा। उन्हें कटु यथार्थ से प्रथम साक्षात्कार यहीं हुआ । पार्टी में सक्रिय कार्यकर्ता. का समय भी वही था, यँही समय 'छात्र-काल' भी रहा । पार्टी के कारण नाबालिग आयु में ही कुछ दिनों के लिये वे नैनी जेल की सलाखों के भीतर कैद रहे । उन्हें कॉलेज की परीक्षाओं में दो वर्ष के लिये बैठने नहीं दिया गया।

उनके किशोरावस्था के समय में प्रेम गाथा गुँथी हुई थी । अपने से दो-तीन वर्ष बडी उम्र की लड़की के प्रति उन्हें आकर्षण हुआ परंतु वह विवाहसूत्र में न बँध सका। लड़की का विवाह अन्यत्र कहीं हो गया- अत: यह प्रेम असफल रहा ।

इ) युवा अवस्था :-

कमलेश्वर को युवावस्था में भी पैर जमाने के लिये काफी संघर्ष करने पडे। इलाहाबाद आकर पढ़ाई जारी रखने के लिये एवं गुज़ारा करने के लिये उन्हें कठिन दौर से गुज़रना पडा । उन्होंने ट्यूशन इत्यादि पढ़ाकर भी गुज़ारा किया । उन्होंने बी.ए. में पढ़ते समय इलाहाबाद से निकलनेवाली पत्रिका 'बहार' में संपादन कार्य किया । उन्होंने कभी कही प्रूफ रीडिंग का कार्य तो कहीं छिटपुट लेखन कार्य किया । अपने बुरे वक्त में बुढ़िया के काजल का रैप्पर बनाने व साईनबोर्ड बनाने से लेकर चाय के गोदाम की रातपाली में चौकीदारी करके भी उन्होंने गुज़ारा किया । कमलेश्वर ने जगह-जगह अनुवाद का कार्य एवं रेडिओं आदि पर भी कार्यक्रम किये । उनके उन दिनों का अंदाज उनके मित्र व सहपाठी दुष्यंतकुमार के इस वक्तव्य में होता है-

''हर महीनें उसका नाम फीस जमा न करनेवाले 'डिफाल्टर' छात्रों की लिस्ट पर रहा करता था, क्योंकि जेब खर्च नाम की कोई चीज उसके पास न होती थी, इसलिये फीस के रुपयों में से कुछ वह हमेशा खर्च कर लेता था और वक्त पर उसके पास पूरे पैसे न होते थे ।'' [३]

कमलेश्वर विश्वविद्यालय के अध्ययन के समय छात्रों की सक्रिय राजनीति में भाग लेते थे । उन्होंने उन दिनों को उद्दाम व साहसपूर्ण कहा है । उन्होंने सन् ५३ में एम.ए. में हिन्दी विषय लेकर दाखिला लिया और इसके साथ ही उनका जीवन साहित्य की ओर मुडा । कमलेश्वर का यह हिन्दी से एम.ए. में दाखिला न होकर प्रेमचंद की परम्परा में दाखिला था । तब से आज तक वे हिन्दी के होकर रह गये ।

सन् १९४६ में एम.ए. पास कर लेने से ही उनकी समस्याओं का अंत नहीं हुआ । उनकी आर्थिक समस्याएँ ही केवल मुँह बाये न खडी थी, उन्हें साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश करने के पश्चात् भी काफी विरोधों और तनावों को झेलना पडा । जीवन का रास्ता दुस्तर था तो साहित्य का प्रस्तमय । १९५४ के पश्चात् काहनी लेखन, उपन्यास लेखन के क्षेत्र में वे कदम रख रहे थे । उनकी सर्वप्रथम कहानी 'सींखचे' की

नोटिस ली गई। परंतु 'राजा निरबंसिया' ने उन्हें प्रतिष्ठा दी। उन्होंने स्वतंत्र लेखन कार्य के अलावा १९५४ से १९५७ तक 'कहानी' पत्रिका में सहायेगी सम्पादन का कार्य किया साथ ही मिशनरी स्कूल में पढ़ाने का भी। इस प्रकार १००-१५० उनकी आमदनी होती। 'नई कहानी' (आंदोलन) को स्थापित करने का कार्य भी राकेश, यादव एवं कमलेश्वर द्वारा जोर-शोर से हो रहा था। इस आंदोलन के कारण उनके जीवन में तनाव आये।

१९५७ में इलाहाबाद के रेडिओ (आकाशवाणी) पर कमलेश्वर ने स्क्रिप्ट लेखन का कार्य प्रारंभ किया। १९५७ के अंत में ही उनका तबादला दिल्ली दूरदर्शन में हो गया। उन्होंने १९५७ से १९६१ तक दूरदर्शन की नौकरी की। उसी दौरान उन्होंने 'जार्ज पंचम की नाक' कहानी लिखी। उन्हें महसूस हुआ कि सरकारी नौकरी करते हुए सत्ता के खिलाफ या उसके कमजोर पक्ष का उद्घाटन करनेवाला साहित्य लेखन उनकी नौकरी छुडवा सकता है। 'यथार्थ एवं अनुभूति की प्रामाणिकता' पर उनकी लेखनी की पकड इन विरोधों से न डगमगाई। ये भी जीवन के कठिन वर्ष थे। लेखक की सत्ता से सीधे-सीधे टकराहट। परिणाम व्यक्ति कमलेश्वर ने भोगा, लेखक कमलेश्वर ने गलत समझौता नहीं किया। उनकी २७५ रु. की नौकरी तो छूट गई। माँ को भी वे रुपये न भेज पाते। उनका गायत्रीदेवी से विवाह भी हो चुका था और आमदनी का बँधा जरिया न था। परंतु उसी समय उन्हें एक धक्का और लगा। उनकी नौकरी छूटने के बाद एक बिटिया हुई। वे बेटी को देखने व पत्नी को मिलने मैनपुरी जाना चाहते थे, परंतु उनकी जेब खाली थी। उनके ही शब्दों में-

''मैनपुरी कस्बे में कोई यह माननेवाला नहीं था कि दिल्ली जाकर कैलास यानी मैं (कमलेश्वर) भूखा भी मर सकता हूँ या भूखा मर रहा हूँ। मेरे पास पैसे की इतनी कमी हो सकती है कि मैं अपनी पहली संतान के जन्म लेने पर घर न पहुँच सकूँ।'' [४]

बच्ची की मृत्यु हो गई और वह गाड दी गई। इस घटना ने उनको बहुत धक्का पहुँचाया। उसी अवसाद, निराशा और अजनबीपन, सूनेपन में लिखी गई कहानियाँ हैं 'पराया शहर', 'खोई हुई दिशाएँ', 'दूसरे', 'नीला झील'। इस दौर के उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं- 'डाक बंगला', 'लौटे हुए मुसाफिर'।

१९६१ से उनके गर्दिश के दिन शुरु हो गये। उनके लिये न साहित्य का मोर्च सरल था और न ही जीवन का। वे न मैनपुरी जाकर बस सकते थे और न ही इलाहाबाद। वे बस दिल्ली जैसे महानगर के जटिल जीवन को झेल रहे थे। अब तो उनपर जिम्मेदारी भी दोहरी थी। जैसे तैसे इडली सांभर खाकर, बिना शक्कर की चाय पीकर वे गुजारा कर रहे थे। वे अर्थोपार्जन के लिये दो रुपये पर पेज अनुवाद कार्य करते। वे होनसांग और फाहियान की यात्रा कहानियाँ आदि लिखकर गुजारा करने लगे। परंतु उनका हिन्दी कथा साहित्य लेखन सक्रिय था। इसके अलावा गाईडनुमा पुस्तक समीक्षा लेखन या निबंध का संकलन तैयार करना उनकी विवशता थी।

१९६३ आते-आते उनके जीवन में थोडी स्थिरता आ गई। इसी वर्ष 'नई कहानियाँ' (दिल्ला) पत्रिका का सम्पादन कार्य मिला। साथ ही टेलीविजन से भी कांट्रेक्ट मिलने लगे। उनके जीवन के कठिन दिन गुजर गये। परंतु इस दौरान ही उन्होंने 'नई कहानी की भूमिका' लिखकर नई कहानी आंदोलन को प्रतिष्ठित किया। उनकी पारिवारिक स्थिरता भी यहीं से प्रारंभ होती है। एक बिटिया हुइ जिसे प्यार से वे 'मानु' कहकर बुलाते। उनका परिवार दिल्ली आकर उनके साथ ही बस गया। वे १९६५ तक 'नई कहानियाँ' पत्रिका से जुड रहे।

१९६६ में वे दिल्ली छोड़कर 'सारिका' मासिक पत्रिका के संपादक बनकर १९६७ में बंबई आ गये। १९६७ के पश्चात् कमलेश्वर उत्तरोत्तर स्थिर होते गये। दिल्ली के दु:खों ने उन्हें सफल बनाया तो बंबई के सुखों ने उन्हें स्वतंत्र लेखक के अलावा प्रख्यात संपादक, टी.वी. के सफलतम कार्यक्रम का संचालक बनाया। साथ ही फिल्मों के कुशल संवाद लेखक, समांतर कहानी के प्रणेता और न जाने कितने-

कितने विशेषण उनके व्यक्तित्व को गढ़ते गये । उन्हें प्रतिष्ठा, नाम, इज्जत, शोहरत, यश, पैसा सब कुछ मिला । बंबई आने के बाद उन्होंने पीछे मुडकर नहीं देखा । बंबई नगरी में उनके आर्थिक तनाव व संकट के बादल तो छँट गये थे । परंतु उनके 'सारिका' पत्रिका के सम्पादन काल में उनका विरोध पूँजीपति प्रतिष्ठान के साथ हुआ। आपात्काल के दौरान व तदन्तर कार्य करना कठिन हो गया । १९७८ तक वे 'सारिका' में कार्यरत थे । उनके 'समांतर आंदोलन' का मुखिया बनने पर पत्रिका को (मैनेजमेंट) आपत्ति न थी परंतु सत्ता का विरोध करनेवाली कलम को कोई भी प्रतिष्ठान स्वीकार करने को तैयान न था । परिणाम स्पष्ट था उन्हें टाइम्स छोडना पडा ।

ई) प्रौढ़ अवस्था :-

१९७८ में 'सारिका' की संपादकी छूटने के पश्चात् एक बार फिर जीवन में रिक्तता आ गई । इतने व्यापक स्तर पर जुड रहने के पश्चात् जीवन में एक खालीपन सा आ गया । परंतु कमलेश्वर जैसे व्यक्ति इन घटनाओं से हताश नहीं होते । उन्होंने रिक्तता को फिल्मी लेखन से भरना चाहा । १९७८ से १९८० तक उन्होंने क्रमशः 'कथायात्रा' व 'श्रीवर्षा' पत्रिकाओं का सम्पादन बम्बई में किया । १९८० में एक बार फिर वे सरकारी नौकरी से जुडे । भारत सरकार ने उन्हें दूरदर्शन (दिल्ली) में संयुक्त महानिदेशक के रूप में चुना । १९८२ तक उन्होंने इस पद को सुशोभित किया । १९७८ के पश्चात् उन्होंने अपने आपको फिल्मी लेखन क़ी ओर समर्पित किया । उन्होंने करीब ३० फिल्मों के संवाद व स्क्रिप्ट आदि के लेखन किये । फिल्मों ने उन्हें खूब पैसा दिया ।

१९८६ से फिल्मी लेखन से वैराग्य व स्वतंत्र लेखन के प्रति उनमें अनुराग जगा । इसी वर्ष 'गंगा' (दिल्ली) पत्रिका के संपादक सलाहकार के रूप में वे कार्यरत रहे। सृजन की धारा जो कुछ वर्षों के लिये अवरुद्ध हो गई थी पुनः प्रवाहित हो चली । १२-१३ वर्ष के अंतराल के पश्चात् उन्होंने कहानी लेखन प्रारंभ किया । एक उपन्यास भी लिखा 'रेगिस्तान' । एक कहानीसंग्रह भी छपा- 'इतने अच्छे दिन' ।

१९९० जुलाई से १९९१ फरवरी तक वे दिल्ली से निकलनेवाले पत्र 'दैनिक जागरण' में संपादन का कार्य करते रहे। इस पत्र की संपादकी के अलावा वे टेलीफिल्म पर भी हाथ आजमा रहे हैं। वे इस प्रकार के जनमाध्यमों से सदा अंतरंगता से जुडे रहे हैं।

संक्षेप में कह सकते हैं कि कमलेश्वर के लिये न तो जीवन सरल रेखा में चला, न साहित्य एवं न ही पत्रकारिता की दुनिया। परंतु उन्होंने अपने जीवन की राह पत्रकारिता में खोज ली है। वे अब भी सक्रिय हैं आगे आनेवाले संकटों से जूझने को तत्पर।

उ) गृहस्थी जीवनः-

कमलेश्वर के पत्नी का नाम गायत्री हैं। दाम्पत्य जीवन में गायत्रीदेवी ने आपको हमेशा सहयोग दिया है। अपने पति के साहित्यिक कार्यों को गायत्रीजी हमेशा संवर्द्धित करती रही है। आर्थिक विपन्नता के दिनों में आपको हमेशा गायत्रीदेवी ने साथ दिया है। जब कमलेश्वर जी ने दिल्ली दूरदर्शन में कार्यरत थे, तब वह पहली बार माँ बनी थीं, लेकिन उस वक्त कलमेश्वरजी वहाँ नहीं थे ओर उस बच्ची की मृत्यु पर भी वे वहाँ नहीं थे। तो भी गायत्रीदेवी ने अपने आपको संभाला है। स्वयं उन्हींके शब्दों में, ''मैं अजीब उलझन में पड गया था। अता-पता कुछ था नहीं, पैसे की तंगी बहुत ज्यादा थी। घर से खबर आयी थी कि मरी पत्नी ने एक लडकी को जन्म दिया है। माँ ने घर भी बुलाया था। मैं अपनी पहली संतान को देखना भी चाहता था। छुट्टी मिलती नहीं थी। पैसे पास नहीं थे। जाना दोनों तरह से मुश्किल था। तभी खबर मिली कि मेरी पहली बच्ची की मृत्यु हो गयी। वह धर्ती में गाड दी गई.......... मैं उसका मुँह तक नहीं देख पाया।'' एक पिता को अपनी पहली संतान को न देख पाने की तकलीफ का हम अंदाज़ा लगा सकते हैं। आपके दूसरी बच्ची का नाम मानू हैं। जिसके जन्म ने आपके परिवार को सुख में परिवर्तित किया है।

ऊ) अजीविका :-

कहानी लेखन के अलावा कमलेश्वर के विभिन्न कार्य-क्षेत्र रहे हैं। किशोरावस्था से ही उन्हें कमाई का जुगाड़ करना पडा था। आर्थिक तंगी ने उन्हें किशोरावस्था में ही 'मैच्योर' बना दिया था। उनके विभिन्न कार्यक्षेत्र आज तक इस प्रकार हैं।

मैनपुरी में 'प्रकाश प्रेस' में प्रुफ-रीडिंग तथा स्थानीय पत्रिका में थोडा बहुत लेखन। राजा साईन आर्ट' (इलाहाबाद) में साईन बोर्ड की पेंटिंग के कार्य के साथ-साथ ड्राईंग का कार्य भी किया। (१९४६-४७)

'जनक्रांति' साप्ताहिक (इलाहाबाद) में क्रांतिकारियों की जीवनियाँ आदि लिखते थे। यह कार्य प्रायः अवैतनिक होता। (१९४६-४८)

'बहार' सिनेमासिक (इलाहाबाद) में ५० रुपये माहवार पर संपादन।

'शहनाज आर्ट' साईन बोर्ड पेंटर्स (इलाहाबाद) (१९४८) में साईन बोर्ड पेंटिंग अनियमित तनख्वाह पर।

बुक ब्रॉंड चाय के गोदाम (इलाहाबाद) की रातपाली की चौकीदारी दूसरे नाम से की। 'कहानी' मासिक (इलाहाबाद) में १०० रुपये माहवार की नौकरी की। उस समय पत्रिका के संपादक श्रीपतराय थे। (१९५४)

'सेंट जोसेफ्स सेमीनरी' (इलाहाबाद) में भारतीय तथा विदेशी केथोलिक ब्रदर्स के लिये हिन्दी अध्यापन, १२५ रुपये माहवार पर (१९५२-५७) तक।

'राजकलम प्रकाशन' (इलाहाबाद) में साहित्य-संपादक के रूप में १५० रुपये माहवार पर कार्य किया।

'श्रमजीवी प्रकाशन' की शुरुआत की। ३२ हजार कर्जा चढ़ जाने से काम ठप्प।

'ऑल इंडिया रेडिओ' (इलाहाबाद) में २७५ रुपये माहवार पर स्क्रिप्ट राईटर के रूप में नियुक्त। (१९५७)

'दिल्ली दूरदर्शन' में तबादला स्क्रिप्ट राईटर के रूप में। (१९५७-५९)

'नई कहानियाँ' मासिक दिल्ली का संपादन १९६३-६५ तक किया।

'इंगित' साप्ताहिक का संपादन (१९६१)।

'सारिका' मासिक (बंबई) पत्रिका का संपादन मार्च, सन् १९६७ से १९७८ अप्रैल तक।

'कथायात्रा' का संपादन १९७८-७९। (बंबई में)

दूरदर्शन भारत सरकार द्वारा संयुक्त महानिदेशक(दिल्ली) १९८०-८२ बंबई में ही सिनेलेखन १९८२ से १९८६ तक।

'गंगा' मासिक पत्रिका (दिल्ली) का संपादन सलाहकार का कार्य १९८६-८८।

१९८६-८७ से स्वतंत्र कहानी-लेखन जारी।

१९९० जुलाई से फरवरी १९९१ तक दिल्ली से निकलनेवाले पत्र 'दैनिक जागरण' का संपादन।

१९९१ से पुनः कहानी लेखन, फिल्म संवाद लेखन, टी.वी. सीरियल लेखन में व्यस्त।

१.१.९ साहित्यिक प्रेरणा :-

दसवी कक्षा पास करते करते उन्होंने (स.न.१९२१) में क्रांतीकारी समाजवादी पार्टी के सम्पर्क में आये मार्क्सवादी की सक्रिय पाठशाला में शामिल और जनक्रान्ति में शहिदों के जीवन-चरित्र पर छोटे-छोटे लेख लिखने शुरू किये। वही से लेखन साहित्य की विधिवत दीक्षा मिली, और उसी में अपने निर्णय जुडते थे।

कमलेश्वर को साहित्यिक प्रेरणा मार्क्सवादी चिन्तन धारा और मुंशी प्रेमचन्द जी को लेकर साहित्यिक प्रेरणा मिल गई है। और कमलेश्वर जी को साहित्यिक प्रेरणा का और एक महत्वपूर्ण कारण बचपन में हुई पिता मृत्यु।

कमलेश्वरजी की साहित्यिक रचना में मानवीय व्यवहार में अपूर्व सामंजस्य है, और कमेलश्वर की रचनाएँ प्रगतिशील लेखन के भीतर के तात्कालिक सवालों से ही निर्देशित होती है । कमलेश्वर एक संश्लिष्ट (Composite) चरित्र और साहित्यिक नाम है। लिखने के लिए विषय - वस्तु सीधे जन -जीवन के अनुभवों से ली है । कमलेश्वर ने अपनी रचना और वैचारिकता को प्रेमचन्द और गोर्की के विचारों के आलोक में ही परिष्कृत किया है । आदमी और साहित्य को एक दूसरे का पर्याय मानकर अपनी साहित्य यात्रा की शुरूआत की है । कमलेश्वर की दृष्टि में लेखक आदमी और समय की चिन्ताओं के साथ ही सम्बन्ध होता है ऐसा उन्होंने कहा ।

कमलेश्वर के शब्दो में ....

''हम विविध भारतीय भाषाओं के समकालिन लेखक साहित्य को सौंदर्यवादी, कलावादी या अमूर्त मानवतावादी बुद्धि के विलास का एक कारगट जरिया मानते हुए वर्ग संघर्ष के इतिहास-सम्मत निणर्य को अंगीकार कर लेना जरूरी समझते है । इसलिये हम सौन्दर्यवादी, कलावादी, अमूर्त मानवतावादी और बुद्धि विलासी साहित्य को नकारकर दलित, वंचित, शोषित, बाधित, और अपमानित सर्वहार के वर्ग-संघर्ष में रचनात्मक भूमिका अदा करनेवाले समय सापेक्ष साहित्य को अपना मूलाधार माना है ।''

१.१.१० पुरस्कार/सम्मान :-

कमलेश्वर जी को साहित्य क्षेत्र में कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है । जिस में हिन्दी अकादमी का 'शलाका सम्मान' उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का 'भारत-भारती सम्मान' अखिल भारतीय कस्तुरी संस्थान, मध्यप्रदेश का ' माणिक वर्मा पुरस्कार' आदि प्रमुख हैं ।' साथ में साहित्यक्षेत्र का श्रेष्ठ पुरस्कार उनके उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' को सन २००३ में 'साहित्य -अकादमी' पुरस्कार से सन्मानित किया है । वर्तमान मे कमलेश्वर केंद्रीय नियोजन समिति के मानद सदस्य है । अस्तु यहाँ ध्यातव्य यह है कि पुरस्कार के लिए कमलेश्वर ने तो साहित्य-सृजन किया है, न उसके लिए कोई जुगाड निर्माण करने का प्रयास न ही वे किसी पुरस्कार के आदीन या मुहताज हुए है ।

१.१.११ अन्य फुटकर कार्य :-

कमलेश्वर ने कई पत्रिकाओं में लेखन कार्य नियमित रूप से किया। उपरोक्त विवरणों के अलावा उनके कई अन्य कार्य क्षेत्रों का विवरण नहीं मिलता।

कमलेश्वर ने आकाशवाणी के लिये लगभग ७०० स्क्रिप्टों का लेखन किया। दूरदर्शन के लिये भी लगभग २५० स्क्रिप्टें लिखीं। दूरदर्शन (दिल्ली) से समाचार एवं अन्य कार्यक्रमों का प्रस्तुतिकरण किया। दूरदर्शन पर साहित्यिक कार्यक्रम 'पत्रिका' के आयोजन का श्रेय भी उन्हें जाता है। यदा-कदा आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर रनिंग कांमेट्री का कार्य वे करते रहते हैं। दूरदर्शन के लिये पहली फिल्म 'पंद्रह अगस्त' के निर्माण का कार्यभार भी उन्होंने अपने कंधो पर लिया। उन्होंने भिवंडी में हुए हिंदू-मुस्लिम दंगों पर टेलीफिल्म का निर्माण भी किया। उन्होंने बाँग्लादेश में मुक्ति वाहिनी के साथ बीस दिन बिताये। तथा राजस्थान में चुनावों के दौरान प्रगतिशील उम्मीदवारों के लिये प्रचार कार्य किया। उन्होंने विदेशों में जाकर बाँग्लादेश के मुक्तिसंग्राम के लिये प्रचार कार्य किया, साथ ही विदेश-भ्रमण भी किया। दूरदर्शन पर उन्होंने परिक्रमा कार्यक्रम को बडी सूझबुझ के साथ प्रस्तुत कर अपनी प्रतिभा से कई लोगों को चकित किया। कमेलश्वर ने साहित्यिक कहानियो को दूरदर्शन पर स्थापित कराने का प्रयास किया। कमलेश्वर १९७८ से आज तक हिन्दी सिनेमा में स्क्रिप्ट व संवाद लेखन कार्य सफलतापूर्वक कर रहे हैं।

अ) सेवा :-

कमलेश्वर जीने अपने आयु के बचपन में भारत की आजादी के लिए क्रांतिकारियों के डाकिया का- एक क्रांतिकारी का संदेश दूसरे क्रांतिकारी दल तक पहुँचाने का कार्य किया है। साथ ही किसान आंदोलन में भी सक्रियता से कार्य किया है।

कमलेश्वर जी की सेवा आकाशवाणी और दूरदर्शन जैसे जनसंचार माध्यमों में महत्वपूर्ण रही है। दूरदर्शन में एक पटकथा एवं संवाद लेखक से एडीशनल

डायरेक्टर जनरल पद तक दौड लगायी है । साथ ही हिन्दी फिल्मों और धारावाहिकों के पटकथा लेखन का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है । इस विषय में संपादकीय कथन है कि, **''उन्होंने लगभग एक सौ हिन्दी फिल्में लिखी हैं, तथा छोटे पर्दे को, आम दर्शकों के लिए 'बडे पर्दे' में परिवर्तित करने के लिए विभिन्न हैसियतों से सर्जनात्मक योगदान दिया है । साथ ही उन्होंने दर्पण, बेताल पच्चीसी, विराट, युग तथा हिंदोस्ताँ हमारा जैसी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित इतिहास परक धारवाहिक लिखे हैं ।''** [५]

आपका हिन्दी पत्रकारिता में और साहित्यिक में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान है। 'नई कहानियाँ', 'सारिका', 'कथा यात्रा', 'गंगा' आदि चर्चित सात पत्रिकाओं का संपादन किया है, तो दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर जैसे समाचार पत्रों के संपादन कार्य भी संभाला है । उपर्युक्त सेवा और आपकी साहित्यिक सेवा को निम्नांकित कृतित्व उपभाग में विस्तार से अध्ययन करने का प्रयास किया गया है ।

आ) हॉबी :-

कमलेश्वर जी कि सबसे श्रेष्ठ हॉबी साहित्यिक रचना है । उन्होंने यह स्वयं कहा है, **''जहाँ तक मेरी हॉबी का सम्बन्ध है मुझसे बडा खेद है कि जीवन-संघर्ष ने कभी मुझे मनोविनोद के लिए कोई शगल नहीं रखने दिया । लिखने का शगद सदा रहा अब लिखे हुए से पैसा भी पाता हूँ तो मेरी यह हॉबी मेरा व्यवसाय भी बन गयी है ।''**

इ) फिल्म और संवाद लेखन :-

कमलेश्वर ने पहली वैचारिक फिल्म संवाद लेखन की यात्रा शुरू कि है, जो बात आधी, मौसम, आमानुष, छोटीसी बात, रंग-बिरंगी, फिर भी, डाक बंगला, मिस्टर नटरवलाल, पति-पत्नी और वह, सौतन, राम-बलराम, बदनाम बस्ती, सारा आकाश, रजनी गंधा, दि बर्निंग ट्रेन, सौतन की बेटी, इन्सान की औलाद, बरसात की एकरात , साजन की सहेली, सदा सुहागन, संतोष आनन्द, आश्रम, तुम्हारी कसम,

आधादिन, आधीरात, हादसा, बाजी, डिवोर्स, शारदा, खुदा-गवाह, मृगतृष्णा, प्रेम दिवानी, आदि लगभग सौ फिल्मों की स्क्रिप्ट लेखन किया है ।

ई) व्यंग्य और विनोदप्रियता :-

कमलेश्वर खुशदिल आदमी हैं । व्यंग्य और विनोदप्रियता उनकी अन्यतम विशेषता है । अपने जोरदार ठहाकों से कइयों के दिलों पर छा जाते हैं ।

जसवंत सिंह बिरदी के अनुसार-

''जहाँ कही भी कहकहा सबसे ऊँचा हो वह कमलेश्वर होता है । यह केवल कहकहा ही नहीं, एक धडकन भी है ।'' [८] लतीफे और चुटकुले तो उनकी जबान पर सदा मौजूद रहते हैं । कभी-कभी मजाक मजाक में ही बडी गंभीर बात कह बैठते हैं । परंतु उनके विनोद का लक्ष्य किसी की दुखती रग को छूना नहीं होता । दुष्यंतकुमार के अनुसार-

''वह बेहद खुशदिल, खुशमिजाज और मिलनसार आदमी हैं । लतीफों और चुटकुलों की फुलझडियों से वह महफिलें गुलजार रखता है । और बात को मोडकर बात पैदा करने में उसका जवाब नहीं ।''

उनके मित्र राजेन्द्र यादव भी उनकी इस बात को इस तरह कहते हैं-

''दर्जनों चंडूरवाने के किस्से उससे आप सुन लीजिए । उनका उद्देश्य केवल दूसरों की टाँग खींचकर मजा लेना है ।'' [९]

. इसी विनोदप्रिय स्वभाव के कारण किस्से गढकर सुनाने में माहिर होने के कारण दोस्त लोग उन्हें झूठा भी साबित करते हैं । 'माधुरी' (पत्रिका) के पूर्वसंपादक अरविंद कुमार कहते हैं, **''जब भी हँसता है जोर से दिल खोलकर दूसरों के आनंद में सहभागी बनने के लिये हँसता है ।''** [१०] उन्होंने उनकी तुलना ख्वाजा नसरुद्दीन से की है ।

कभी-कभी तो दोस्तों के साथ मजाक इस कदम तक पहुँच जाता है कि शैतानी को कार्यरूप दिया जाता है । 'संडे मेल' में मुद्रित 'आधार शिलाएँ' में एक रोचक किस्से का वर्णन है- दुष्यंत कुमार ने अपनी शादी का सूट लांड्री में धुलवाने डाला था । कमलेश्वर को मजाक सूझा । वे लांड्रीवाले के पास पहुँच गये और उसे विश्वास दिला दिया कि उस सूट को बेंडमास्टर के रंग में रंग, पट्टियाँ लगानी हैं । लांड्रीवाले ने अनुरोध का पालन किया । परंतु जब दुष्यंतकुमार अपना सूट लेने गये तो सूट को बेंडमास्टर की पोशाक का रूप लिये देख माथा ठोककर रह गये । ऐसे बीसियों किस्से आपको कमलेश्वर के मजाकिय स्वभाव के मिलेंगे ।

दोस्तों की छेपटी उडाने में उस्ताद कमलेश्वर के व्यक्तित्व का दूसरा पहलू व्यंग्य भी है । वे साहित्य में व्यंग्य के प्रयोग में अत्यंत उदार हैं । विशेषतः परवर्ती कहानी साहित्य में उसकी छटा देखते ही बनती है । अपनी दुधारी तलवार के साथ व्यवस्था को निशाना बनाया है । उनकी व्यंग्यात्मकता उनके व्यक्तित्व का अहम् हिस्सा है । वे व्यंग्य के मौकों को भी नहीं चूकते उसमें विनोद का पुट भी बना रहता है ।

दुष्यंत कुमार उनके मूलभाव को व्यंग्य विनोद नहीं करुणा कहते हैं । निम्न मध्यवर्ग व आम आदमी के प्रति अवश्य उनके हृदय में करुणा है परंतु प्रस्तुत रूप में व्यंग्य का आश्रय ले लिया जाता है ।

उ) विद्रोही प्रवृत्ति एवं निर्भीकता :-

बचपन से ही कमलेश्वर के स्वभाव में विद्रोह के बीज थे । दुनियाँ के पक्षपातपूर्ण व्यव्हार को देखकर वे दुखी हो जाते थे । परंतु कमलेश्वर की बाल्यावस्था में माँ द्वारा उनके विद्रोह स्वभाव का शमन किया गया । मास्टरों की सख्ती और पिटाई ने उनमें विद्रोह की प्रवृत्ति पनपा दी थी । उसका परिणाम था पढाई से ध्यान हट जाना। बडे होने पर विद्रोह के बिरवे ने 'जनक्रांति' से जुडकर आकार लिया । क्रांतिकारी विचार और विद्रोही लेखन ही उनका लक्ष्य था । अपने छात्रकाल में प्रदर्शनबाजी, झंडाबाजी,

नारेबाजी में भी भाग लिया । वे अपने इलाहाबाद के विश्वविद्यालय के माहौल को दहकानेवाले दिन कहते हैं । **''इलाहाबाद के दिन उद्दाम व साहसपूर्ण रहे ।' ज्वालामुखी के दहाने बैठकर सामाजिक न्याय, आत्मसम्मान व आर्थिक न्याय के सपने देखे जो पूर्ण न हुए । ..... यह देश और अकुलाहट अपना प्रतिकार माँगती थी बार-बार पुकारती थी कि विरोध करो, प्रतिवाद करो, इस व्यवस्था को बदलो ।''** [११]

कमलेश्वर के विद्रोही व्यक्तित्व के सदा दो ध्येय रहें हैं- पहला अधिकार की लडाई, दूसरा सत्ता के प्रति असंतोष व प्रतिवाद की अभिव्यक्ति ।

विद्रोह व निडरता का आपस में निकट का संबंध है । उनकी निर्भीकता व निडरता का एहसास इनके दो इस्तिफों से हो जाता है । १९६१ में जब वे दूरदर्शन (दिल्ली) में कार्यरत थे, उसी समय उन्होंने 'जार्ज पंचम की नाक' कहानी लिखी थी । उनकी कहानी सत्ता को पसंद नहीं आई । परंतु कमलेश्वर ने समझौता न करके निर्देशक कृष्णमूर्ति से कहा, **''सर, मुझे ये मेहरबानियाँ नहीं चाहिये । मैं कल से नहीं आऊगाँ ।''** [१२]

दूसरा इस्तिफा था 'टाइम्स' की पत्रिका 'सारिका' से । शासन व्यवस्था के खिलाफ धडकते, ज्वालामुखी के समान लावा उगलते उनके लिखे गये संपादकीय त्यागपत्र का कारण बने । लेखक ने भारत जैसे प्रजातांत्रिक देश में 'विचारों की स्वतंत्रता एवं अभिव्यक्ति के मूलभूत अधिकार' को खोना नहीं चाहा । यह उनके स्वभाव की निर्भीकता ही थी । दब्बू बनकर वे जी नहीं सकते थे । श्री अरविंदकुमार के अनुसार-

''उसने कभी अपने को छोटा नहीं समझा, न किसी से न पूरी व्यवस्था से। वह डरा नहीं, कभी औसान नहीं भूला ।'' [१३]

विमल मित्र के अनुसार-

''कमलेश्वर को साहित्य का विद्रोही लेखक मानता हूँ ।'' [१४] समांतर लेखन वामपंथी लेखन का ही प्रचार-प्रसार था । परंतु वे कभी न सच बोलने से डरे और न ही निकाले जाने से भयभीत थे ।

इसी निर्भिक स्वभाव ने उनकी कलम से सदा सच कहलवाया है । वह सत्य चाहे 'करेला हो या नीमचढा'....। इस विद्रोह और निर्भीकता ने उनके जीवन को अदम्य आत्मविश्वास दिया यह दीगर है कि इसी स्वभावगत विशेषता के कारण उन्होंने भारी कीमत चुकाई ।

ऊ) बहुआयामी :-

कमलेश्वर के व्यक्तित्व की खासियत है उनका आलराउँडर होना । तमिल के लेखक शैरिराजन के शब्दों में कहें- **''वह तेजतर्रार हरफन मौला हैं- सही लेखक आला दर्जे का है, सही व गहरा नजरिया रखता है, इंसान का पुरअसर पैरवीकार है, हर बात को सामान्य जन के हित में पाना चाहता है, भाषा पर बढ़िया दखल है, हर चीज को खूबसूरती से कहने की उसकी अनूठी अदा है ।''** [१४]

कमलेश्वर जन्म से सामंती, आस्था से वामपंथी, पेशे से लेखक और कर्म से आलराउँडर हैं । यह व्यक्ति जीवन में हर वक्त एक नया और अलग-अलग पार्ट अदा करता है । उनके एक व्यक्तित्व में अनेक व्यक्ति समाहित हैं । कमलेश्वर कहानी लेखक हैं, संपादक हैं, आलोचक हैं, उद्‌घोषक, निर्माता, संचालक हैं, गोष्ठी का संचालन करता है । वह युवापीढि का मार्गदर्शक है । वह मामूली आदमियों के सफलतापूर्वक इंटरव्यू लेता है । वह सरकारी-गैरसरकारी संस्थानों का सदस्य है । वह देश-विदेश में भ्रमण करता है । वह एक अच्छा लेखक होने के अलावा अच्छा वक्ता है । सैंसर बौर्ड की सदस्यता भी उन्होंने भोगी है । यह इंद्रधनुष्यी व्यक्तित्व ही उसके व्यक्तित्व की खासियत है । वह हर जगह भी है । वह अनेक काम एक साथ करता है । वह हर जगह भी है । वह अनेक काम एक साथ करता है । वह अनेक क्षेत्रों में माहिर है । जनसंचार के माध्यमों से वह भीतर तक जुडा है तो जन से जुडने की उसकी ख्वाहिश उसे सदैव बहुआयामी व्यक्तित्व प्रदान करती रही है । अरविंदकुमार के अनुसार-

"कमलेश्वर एक नहीं कई काम एक साथ करता है । कहानियाँ उपन्यास लिखता है, एडीटरी करता है, आंदोलन चलाता है, टी.वी. पर कार्यक्रम देता है, फिल्में लिखता है, सब बडी खूबी से करता है । दिन में ७२ घंटे भी इन कामों के लिये कम हैं । चोबीस घंटे इस व्यक्ति को चौबीसों काम रहते हैं ।" [१५]

ए) कर्मठता :-

दिन को ७२ घंटे बना देनेवाले व्यक्ति पहले दरजे का मेहनती इंसान होगा। कमलेश्वर के कर्मठ स्वभाव की कई व्यक्ति दाद दे चुके हैं । दुष्यंत कुमार से उनके मित्र राजेंद्र यादव कहते- **"यार इस आदमी में कितना स्टैमिना है । दिनभर घूम सकता है, बैल की तरह काम कर सकता है, रातभर जागकर लोगों के साथ ठहाके लगा सकता है, फिर भी चेहरे पर थकान या शिकन नहीं ।"** [१६]

इस मेहनत पंसद व्यक्ति को उनके मित्रों ने कई एक स्थानों पर वर्णित किया है । एक अनाम फिल्मी हस्ती के अनुसार-

"आज कमलेश्वर हमारी इंडस्ट्री का सबसे चर्चित लेखक है- पर मैंने उसे पार्टियों में नहीं देखा..... कहीं बैठकर गप्पे लड़ाते नहीं देखा । जब भी देखा सिर्फ काम करते देखा ।" [१७]

अपने को हर जगह देखने की ख्वाहिश ही इस कर्मठता के मूल में है । दोस्तों को अंदेशा है कि कमलेश्वर को काम से सिर उठाने की फुर्सत नहीं । यहाँ तक कि खाना खाने का समय नहीं होता । नेरूरकर जी के अनुसार-

"वर्षा हो, तुफान हो, समय हो, कुसमय हो यह व्यक्ति सबों के हिस्से में बराबर आता है । किसी को न कण भर कम, न कण भर ज्यादा ।" [१८]

'संडे मेल' की पत्रिका में 'आधारशिलाएँ' संस्मरण के अन्तर्गत उन्होंने अपनी व्यस्तता को भी चित्रित किया है । दोस्त लोगों के अनुसार तो कमलेश्वर को खाने की फुर्सत नहीं पर वे स्वयं कबूल करते हैं कि सिर्फ कुछ घंटे सोने की फुर्सत निकालने के लिये भी घर छोडकर किसी होटल में किराये पर कमरा सिर्फ कुछ घंटे सोने के लिये लेते ।

ऐ) सच्चा हमदम और दोस्त :-

कुछ लोगों के पास दोस्ती के नाम पर बैलेंस ही नही होता। कमलेश्वर के दोस्ती के खाते में मोटा बैलेंस रहा। बचपन में चाहें कटरा मुहल्ले का घर सूना हो पर बिब्बन, रमेश और श्यामस्वरूप जैसे मित्र पेडों पर चढने, इमली तोडने, बर्रो के छतों में हाथ डालने के लिये सदा साथ रहते।

किशोरावस्था में इलाहाबाद के दुर्दिनों के साथी मार्कण्डेय और दुष्यंतकुमार जैसे दोस्त रहे। दुष्यंतकुमार ने चाहे कमलेश्वर को एक नंबर का झूठा कहा हो परंतु ये खिल्ली भी दोस्ती के दम पर उडाई हुई है। उन्हें पत्रिका निकालने के लिये रुपयों की जरुरत पडी। बाँदा में कवि-सम्मेलन का आयोजन था। दुष्यंतकुमार ने अपना गीत कमलेश्वर को पढ़ने के लिये दे दिया। मित्र को पचास रुपये मिल जायें इसलिए कहानीकार कमलेश्वर कवि-सम्मेलन में सस्वर गीत पढ़ गये। परन्तु ये मदत एक तरफा नहीं रही। दुष्यंतकुमार को भी एक बार पाँच सौ रुपयों की जरूरत थी। उन्होंने प्रकाशक से अर्थशास्त्र की पुस्तक अनुवाद के लिये ले ली। साथ ही रुपये भी एडवांस ले लिये, पुस्तक के अनुवाद का कार्य कमलेश्वर को सौंपकर निश्चिंत होकर गायब हो गये। परन्तु आज दुष्यंत जैसे मित्र कमलेश्वर का साथ सदा के लिए छोड चले गये हैं।

उनके दुर्दिनों के अन्य साथी नरेश बेदी, जयंत गडकरी, प्रयुस सिंह व श्रीपतराय भी रहे हैं।

कमलेश्वर को अजीज दोस्त भी मिले। १९५६ में जालंधर स्टेशन पर जिस का नाम था मोहन राकेश। कमलेश्वर के शब्दों में-

"हम दोनों एक दूसरे को देखते ही दोस्त हो गये। यह पहली नजर की दोस्ती थी, जो अन्त तक निभती चली गई...... राकेश की अंतिम साँस तक।" [१९]

कमलेश्वर की राकेश से दोस्ती ही नहीं एक अटूट रिश्ता भी था। वे साहित्य और जीवन के सुखदुःख के सांझी थे। यादव भी उनके साथ थे। यादव, राकेश और कमलेश्वर की दोस्ती का 'त्रिकोण' प्रख्यात हो गया। वे तीनों साहित्य की चिन्ता से एकसूत्रता में बँधे थे।

राकेश के साथ उनके पारिवारिक सम्बन्ध भी थे । दिल्ली में वे दोनों साथ-साथ एक ही घर में ऊपर नीचे रहा करते । राकेश के प्रथम विवाह-विच्छेद व अनिताजी से विवाह, इन सबके कमलेश्वर साक्षी हैं । अनिताजी से राकेश का विवाह कुछ समस्यापूर्ण था । परन्तु कमलेश्वर जैसे दोस्त ने राकेश का पूरा साथ दिया । राकेश की कुछ समय में अचानक मृत्यु हो जाने से कमलेश्वर के जीवन में रिक्तता छा गई । जिन्दगी के कुछ खाली कोने जो कभी नहीं भरे जा सकते । कमलेश्वर ने तो दोस्ती का अकाऊंट खुला रखा था परन्तु क्रेडिट करनेवाला राकेश ही दुनियाँ छोडकर चला गया।

कमलेश्वर के दो अन्य मित्र भी रहे हैं, यादव एवं मन्नू भण्डारी । कलमेश्वर के अनुसार, "मन्नू हमारी बराबर की मित्र थी, वह राजेंद्र की पत्नी कम, एक बेहद उन्मुक्त स्पष्ट और पूर्ण व्यक्तित्व थी.....हमारे भीतर रेंगती अमूर्त इच्छाओं और कारस्तानियों के परन्तु दुर्भाग्य है कि कमलेश्वर यादव के सम्बन्धों पर ताले लग गये है।"

१.१.१२ परिस्थितियाँ एवं परिवेश :-

कमलेश्वर का प्रारम्भिक लेखन कस्बे तथा परवर्ती लेखन महानगर की संस्कृति व यथार्थ को चित्रित करता है । कमलेश्वर का सम्पूर्ण जीवन मैनपुरी, इलाहाबाद, दिल्ली एवं बम्बई इन चार स्थानों से जुड़ा रहा है । १९५१ से १९९० ते की प्रायः हर कहानी अपने परिवेश का भी सजीव चित्रण करती हैं । अतः यह जानना आवश्यक है कि कमलेश्वर इस सम्बन्ध में कहाँ से कितनी गहराई तक जुड़े हैं । उनके कथास्रोत के स्फुरण बिन्दु कहाँ-कहाँ किन आयामों को छूते हैं ?

कमलेश्वर के अपने संस्मरणों पर लिखे कुछ लेख हैं- 'गर्दिश के दिन', 'अपनी निगाह में', 'मेरी प्रिय कहानियाँ', की (भूमिका) 'आधारशिलाएँ' (संस्मरण 'संडे मल' पत्रिका में मुद्रित) तथा कई इँटरव्यू एवं मुलाकातों में एक बात की पुष्टि होती है कि वे अपनी जन्म-स्थली मैनपुरी व उसकी यादों, पात्रों व स्थितियों को कभी नहीं भुला पाये ।

दुष्यंतकुमार के शब्दों में-

"वह हर महीने मैनपुरी भागकर जाया करता था और तीन-चार बोरे प्लाट लाया करता था।" [२४] कमलेश्वर ने अपनी मैनपुरी को सफलतापूर्वक प्रारम्भिक कहानियों में उतारा है। उनका प्रारम्भिक लेखन कस्बे से जुड़ा है। इस संदर्भ में उनका कथन, **"मैं उस छोटे से कस्बे मैनपुरी का आभारी हूँ, जहाँ जन्मा और पलरक बडा हुआ और जहाँ की धूल धक्कड और जिन्दगी के कोलाहल से भरा पूरा, उदास, किन्तु मोहक वातावरण मेरी अनुभूतियों को नये-नये रंगों में रंगता रहता है।"** [२५]

मैनपुरी के कई पात्र व परिस्थितियाँ लेखन का कथ्य बनी हैं। मैनपुरी की आँधी व प्रकृति के रौद्र रूप ने उन्हें संघर्ष के लिये शक्ति दी।

मैनपुरी का परिवेश कस्बा, लोग, पेड, सडक इस प्रकार चित्रित हैं- **"मेरा परिवार उसी समय एकाएक बहुत बडा हो गया था..... पूरा मैनपुरी कस्बा, उसके लोग, उसके पेड, सडकें, गलियाँ, कुत्ते, नाले, घास, कुएँ, चौराहे सबकी दर्दभरी दास्तानें मेरी हो गई थीं। चबुतरे पर बैठकर खाँसते हुए सैयद अली पेंटर, चुंगी के चौराहे पर चाय की फटीचर दुकान लगाये चायबाबू, मैनपुरी की तम्बाकू खाते जौहरी वैद्यजी, एटा बस अड्डे पर काम करते क्लीनर और ड्राइवर सबकी कहानियाँ मेरी हो गई थीं।"** [२६]

'बदनाम गली' (एक सड़क सत्तावन गलियाँ) उपन्यास, 'राजा निरबसिंया' एवं 'कस्बे का आदमी' की कहानियाँ इसी विसंगति, कुरूपता को चित्रित करती हैं।

मैनपुरी का इतना गहरा प्रभाव पडा कि जब वे आगे इलाहाबाद पढ़ने गये तो भी मैनपुरी छूटती न थी। यह किशोरावस्था की भावुकता थी। कमलेश्वर का साहित्यकार का रूप तो इलाहाबाद में स्फुटित हुआ। यही पर 'जनक्रान्ति' से वे जुड़े व लेखन प्रारम्भ किया। शिक्षा ग्रहण करते हुए हिन्दी साहित्य से उनका नज़दी का सम्बन्ध बना। वैसे इलाहाबाद का सम्पूर्ण वातावरण ही दिग्गज साहित्यकारों के विचारों से धधकता रहता। यहाँ महादेवी वर्मा, धर्मवीर भारती आदि नाम गिनाये जा सकते है।

प्रगतिशील लेखक सम्मेलन आदि ने भी उन्हें प्रभावित किया ।

मैनपुरी की मिट्टी, तो इलाहाबाद की धधकती भट्टीने कमलेश्वर को साहित्य की राह दी । इलाहाबाद के लिये वे कहते हैं, **"यह शहर मुझमें साँस लेता रहता है, जब भी जिन्दगी झटका देती है मन भागकर इलाहाबाद की गजियों में चला जाता है और अपनी शक्ति लेकर लौट आता है ।"** [२७]

"इलाहाबाद की धधकती साहित्यिक भट्टी की पहली आँच मुझे लगी थी । और लगा था कि मन के प्रतिवाद को शब्द दिये जा सकते हैं शब्दों की महत्ता और अर्थो की व्याप्ति की समझ तब इलाहाबाद के साहित्यिक और सांस्कृतिक माहौल ने दी ।"

१९५९ में दूरदर्शन की नौकरी के सिलसिलें में तबादले के कारण कमेलश्वर को दिल्ली आना पड़ा । १९५९ से १९६६ तक के वर्ष उन्होंने दिल्ली में बिताये । इय उनके जीवन का महत्त्वपूर्ण समय रहा । दिल्ली के जीवन में उन्होंने इलाहाबाद की तुलना में फर्क पाया । यहाँ उन्होंने महानगर की नई रवानी देखी । इस शहर और संस्कृति ने उनके मानस पर विभिन्न प्रकार का दबाव डाला । वे उन प्रारम्भिक दिनों में तो नई मानसिकता के दौर से गुजरे ।

"इलाहाबाद छोडते हुए बडी तकलीफ हुई पर यहाँ आकर चारों तरफ देखना शुरु किया तो लगा कि एकाएक सब कुछ बदल गया है । यहाँ एक नई जिन्दगी थी । एक ऐसी जिन्दगी जिसके किनारे खड़े होकर देखने से बहाव का पता नही चलता था.... एक अजीब सा परायापन ओर बेगानापन हैं यहाँ ।" [२८]

दिल्ली के यांत्रिक माहौल ने क़ुछ समय के लिये सृजन अवरुद्ध कर दिया। कमलेश्वर बाहर और भीतर दोनों स्तरों पर मानसिक संकट से गुजरे । मैनपुरी व इलाहाबाद के अनुभव सीमित व अप्रांसगिक लग रहे थे यह तनाव रचना में उतरा । दिल्ली से जुड़कर लेखक ने अपने 'समय संगत यथार्थ' को न केवल स्वीकार किया बल्कि उसे रचनात्मकता प्रदान की । 'खोई हुई दिशाएँ' कहानी का चंदर स्वयं कमलेश्वर के भीतर बैठे महानगर के प्रति अजनबीपन व एकाकीपन को व्यक्त करता

है । 'खोई हुई दिशाएँ', 'माँस का दरिया' एवं 'जिन्दा मुर्दे' इस दौर की लिखी हुई रचनाएँ हैं । जिन उपन्यासों की सर्जना हुई वे हैं 'डाक बंगला', 'तीसरा आदमी', 'लौटे हुए मुसाफिर' । इस दौर के कथा साहित्य में मध्यवर्ग एवं मानव मूल्यों का चित्रण प्रामाणिक अनुभूति से साच हुआ है ।

इसी दौरान उनकी जिन्दगी की सबसे अहम् कहानी लिखी गई 'जार्ज पंचम की नाक' । कहानी ने कमलेश्वर को रातोंरात सुर्खियों में ला खडा किया । सत्ता में नौकरी करते हुए सत्ता विरोध कहानी लिखने के कारण उन्हें मुश्किलों का सामना करना पडा । राजनीति से पहला आमना सामना यहीं हुआ । फिर तो यह उनके लेखन की प्रवाह शैली बन कर उभरा और परिणाम था व्यंग्यात्मक कहानी संग्रह 'जिन्दा मुर्दे'। राजनीति और सत्ता के प्रति उनके मन मे आक्रोश उनके 'समान्तर कहानी' आन्दोलन व कहानी लेखन की पीठिका बना ।

दिल्ली में रहते हुए ही वे, 'नई कहानी' के महत्त्वपूर्ण दौर से भी गुजरे हैं । 'नई कहानी' की सम्पादकी के दौरान 'नई कहानी' को अपने सम्पादकीय लेखों द्वारा पूर्णतः प्रतिष्ठित कराने का श्रेय भी उन्हें दिया जा सकता है । उनका दिल्ली का दौर हिन्दी साहित्य की कहानी के लिये महत्त्वपूर्ण पृष्ठ रहा है ।

१९६६ में (बंबई) में 'सारिका' पत्रिका की सम्पादकी उन्हें बम्बई शहर ले आई । बंबई शहर में आने के पश्चात् 'बयान', 'नागमणि', 'जाखिम', 'लाश', 'कितने पाकिस्तान', 'मानसरोवर के हंस', 'इतने अच्छे दिन' जैसी कहानियाँ लिखीं । बंबई का माहौल कमलेश्वर की अन्य छिपी प्रतिभा को भी प्रकाश में लाया । कमलेश्वर ने 'समान्तर कहानी आन्दोलन' का सूत्रपात करते हुए सामान्य आदमी की नियती से जुड़े लेखन को प्रस्तुत किया । इस दौर में 'यातनाओं के जंगल से गुजरते हुए मनुष्य के साथ चलने का उपक्रम किया ।'

बंबई नगरी में उन्होंने फिल्म क्षेत्र में संवाद लेखन व स्क्रिप्ट लेखन के अलावा सैंसरबोर्ड का अनुभव भी प्राप्त किया जो किसी अन्य महानगर में सम्भव न था।

कहानी लेखन व 'सारिका' की सम्पादकी के अलावा बंबई से जुड़कर उनमें विविधता आई। इस प्रकार इस नगरी का भी उनके लेखन पर प्रभाव परिलक्षित होता है। १९७८ में 'सारिका' की सम्पादकी के पश्चात् वे दिल्ली और बंबई के बीच तारतम्य बनाये अपना जीवन अब स्वतंत्र लेखक के रूप में बिता रहें हैं।

उनके जीवन के प्रारम्भ से लेकर अब तक जिन व्यक्तियों तथा स्थानों व माहौल ने उन्हें प्रभावित किया उसी से एक समर्थ कहानीकार हिन्दी साहित्य को कमलेश्वर के रूप में मिला है। कुल मिलाकर कह सकते हैं कि उनकी प्रेरणा ठोस यथार्थ व प्रामाणिक अनुभव ही रही है न की किसी 'डोग्मा' ने उनको संचलित किया।

अ) राजनीतिक :-

१५ अगस्त १९४७ को लगभग एक शतक तक आन्दोलन करने के पश्चात् भारत वर्ष आजाद हुआ। आजादी अपने उल्लास के साथ ही समस्याओं को साथ लाई। राजनीतिक स्वतंत्रता केवल भारत को ही न मिली, पाकिस्तान को भी मिली। इसी भारत और पाकिस्तान के विभाजन के साथ जुडी अनेकों समस्याएँ भारतवासियों के लिये गुणात्मक होती गई।

हिन्दू और मुसलमानों के बीच वैमनस्य का भाव पनपने लगा। विभाजन दो देशों का नही दो जातियों का हो गया। विभाजन के परिणाम स्वरूप भारत के शरणार्थी पाकिस्तान में व पाकिस्तान के शरणार्थी भारत में कई समस्याएँ ले आये। शरणार्थियों का पुनर्वास देश के लिये बहुत महँगा सिद्ध हुआ। जूनागढ और हैदराबाद निजाम की रियासतें पाकिस्तान में सम्मिलित होना चाहती थीं। कश्मीर का हिन्दू नरेश भारत से जुडना चाहता था। सरदार पटेल के नेतृत्व व सूझबूझ से मामला सुलटाया गया। जूनागढ के पश्चात् जम्मू और कश्मीर का विलय भारत में हुआ। मामला संयुक्त राष्ट्रसंघ की चौखट तक पहुँच गया। सुरक्षा परिषद का युद्ध विराम प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया। तत्पश्चात् हैदराबाद का विलय भी भारत में हो गया।

भारतीय संविधान की प्रस्तुति २६ नवम्बर १९४९ इस काल की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना है। जो संविधान प्रस्तुत किया गया उसमें -

१) सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक न्याय,

२) विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास व धर्म की स्वतंत्रता,

३) सबको समान अवसर प्रदान करने,

४) राष्ट्र की एकता एवं व्यक्ति की गरिमा को पुष्ट करने वाले बंधुत्व की घोषण की गई।

शोचनीय घटना यह है कि संविधान बनते न बनते कि उसमें दरारें पडने लग गई। संविधान की घोषणा तथा उनकी फूट का साहित्य पर गहरा असर पडा। साहित्य में सामंती व पूँजीवादी मूल्यों को दुर्बल बनाकर लोकतंत्रिय परम्परा का मार्ग प्रशस्त किया गया। लोकतांत्रिक सरकार व नीति की घोषणा से साहित्य में बंधुत्व, समानता, अशोषण के मूल्य पनपने लगे।

२६, जनवरी १९५० को भारत 'सर्वप्रभुता-सम्पन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य' बना। इस स्वतंत्र राज्य पर शासन करने के लिये ढेर सारे 'रेडिमेड' कांग्रेस नेता भी मिले।

लगभग ६०० राज्यों, रियासतों के विलयन के पश्चात् सन् १९५२ में भारतीय गणराज्य का प्रथम महानिर्वाचन सम्पन्न हुआ। १९५२ तथा १९५७ के आम चुनावों में कांग्रेस को जबर्दस्त समर्थन मिला। देश की उन्नति और प्रगति के लिये पंचवर्षीय योजनाओंका सूत्रपात हुआ। निर्वाचित सरकार ने अमीरी और गरीबी की खाई पाटने की घोषणा की। देश की खुशहाली के लिये उद्योंगों और कारखानों की बढ़ोत्तरी हुई। कई बाँध बनाये गये, बिजली की सुविधा प्रदान की गई।

आजादी के पश्चात् प्रगति तो आवश्यक हुई, परन्तु सामान्य जनता का उसमें हिस्सा नहीं के बराबर था। प्रभुत्व सम्पन्न लोगों की खोटी नीयत बेनकाब होने लगी। धन, प्रभुता, धरती पर कुछ सीमित लोगों का अधिकार था। गरीबों के दोहन में, तंत्र चलानेवाले प्रशासक एवं सरकारी पदत्त उच्च पदों पर आसीन, खरीददार, ठेकेदार व व्यापरी वर्ग अपनी नीति या अनिति से देश का कर्ता...धर्ता बन खडे हुए। ग्राम्य स्तर

पर पटवारी, तहसीलदार, सिपाही, थानेदार, पंच, सरपंच, ग्रामसेवक, जिलाधीश सब मिल-जुलकर छीना झपटी एवं अवसरवादिता पर उतर आये । भारत-पाकिस्तान के विभाजन के पश्चात् निर्मम हत्याकांड, आगजनी, निर्वासन व दंगे देखकर वैसे भी भारतीयों के मन में निराशा छाई हुई थी । साथ ही विभाजन के दुष्परिणाम आँखों के आगे क्रूरता एवं नृशंसता का नंगा नाच दिखाने लगे । शील-भंग, मारकाट, लूट-फाट, सांप्रदायिक वैमनस्य ने आजादी के तत्पश्चात् एक विकृत एवं भौंडा चित्रण प्रस्तुत किया।

एक ओर तो उदार-चेतना मिली दूसरी ओर विभीषिका का धुँआ ही धुँआ। पूँजीवादी शक्तियाँ अपना सिर अलग ताने उठ खडी हुई ।

इन सभी कारणों से तथाा परिवर्तीत राजनीतिक परिस्थिती के कारण नई कहानी जन-जीवन से अविच्छिन रूप से जुड़कर प्रकट हुई ।

आ) सामाजिक :-

राजनीतिक स्थिति की भाँति सामाजिक स्थितियों ने भी कई कहानी के अभ्युदय में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है । पश्चिमी संस्कृति, औद्योगिक उन्नति, परिवर्तित परिवेश ने सामाजिक स्थिति में हलचल पैदा कर दी । संयुक्त परिवार टूटते बिखरते नजर आये । परिवार की परिभाषा अब पति-पत्नी एवं बच्चे ही हो गई । इस काल में पिता-पुत्र, पति-पत्नी तथा अन्य पारिवारिक सम्बन्धों में तनाव झलकता है । भौतिक समृद्धि एवं सांविधानिक अधिकार ने स्त्री की जीवन शैली को परिवर्तित कर दिया । आर्थिक सुरक्षा से उसकी जीवन शैली बदल गई । शिक्षा के प्रचार-प्रसार से नारी जीवन अधिक जीने योग्य हो गया । शिक्षित-वर्ग की स्त्रियाँ अब स्वावलंबी बनती गई । पुरुष की 'मोनोपोली' कई अर्थो में समाप्त हो गई । विवाहरूप संस्था के समख कई प्रश्नचिन्ह लग गये । भारतीय संविधान ने स्त्री के जीवन को आमूल रूप से प्रभावित किया । युगों से शिक्षित नारी को आज 'पूज्या' और 'देवी' सम्बोधनों से चिढ़ छूटने लगी । कानून से उसे विवाह, तलका, दत्तक लेने, पारिवारिक सम्पत्ति की अधिकारिणी

इत्यादि पुरुष के समान अधिकार देकर उसकी स्थिति को सुदृढ बनाया है। पुरुष के समान अधिकार एवं दर्जा मिलने पर उसकी स्थिति में सुधार आये हैं। स्त्रियों को विद्यालय के दर्जे तक निशुल्क शिक्षा के प्रावधान से उसकी शैक्षणिक स्थिति में सुधार आने की सम्भावना है। बहुविवाह का विरोध, अल्पायु विवाह का निषेध, दहेज-विरोधी कानून, परिवार नियोजन के सम्बन्ध में जागृति एवं विशेष अधिकार उसके पक्ष को और मजबूत करते हैं। इन सभी वस्तुओं का प्रभाव उसके चिन्तन, रहन-सहन आदि पर गहराई से हुआ। स्त्रि के प्रति सामंतकालीन अत्याचार अब कम हो रहे हैं। उन्हें समाप्त होने में एक शतक और निकल जाएगा।

स्त्रियों के अलावा, हरिजनों, आदिम-जातियों, श्रमिकों, बच्चों आदि के लिये भी सुरक्षा योजनाएँ लागू की गई। गरीबी, बेरोजगारी, बढ़ती जनसंख्या की समस्या, वृद्धावस्था से सभी समस्याएँ अनियोजित सामाजिक स्थिति रच रही थीं।

परिवर्तनगामी मूल्यों से गुजरने की प्रक्रिया में इस प्रकार की सामाजिक परिस्थिति ने पृष्ठभूमि का निर्माण कर दिया।

इ) आर्थिक :-

भारत को स्वतंत्र होते ही आर्थिक संकट के दौर से गुजरना पडा। सत्ता के हस्तान्तरण के साथ ही एक बडी राशि (करोडों रुपये) पाकिस्तान को भी दी गई। विस्थापितों के पुनर्स्थापन तथा आन्दोलनों एवं बगावतों को निपटाने में देश को काफी आर्थिक क्षति पहुँची।

हजारों हाथ बेकार थे। वे रोजगार पाने के लिये ऊपर उठे परन्तु उन्हें कोई सुनियोजित उत्पादन इकाईयों में परिवर्तित न किया जा सका। 'समाजवाद' की कल्पना हर नेता ने की परन्तु आर्थिक दृष्टि से जमींदार एवं अधिकरी वर्ग ही पैर जमा सका।

देश की कृषि के अधिक उत्पादन के साथ, उद्योग-धन्धों, बिजली, सिंचाई साधन, परिवाहन, शिक्षा, स्वास्थ आदि सब क्षेत्रों में चौमुखी विकास की आवश्यकता

थी। आधुनिक तकनीक एवं वैज्ञानिक विकास दोनों के बिना कई योजनाएँ खटाई में जा सकती थी। प्रशिक्षीत व्यक्तियों की कमी थी। प्रश्न यह भी विकराल था कि धन सीमित था और योजनाएँ प्रचुर संख्या में थी। उस अल्प-धन-राशि का किस प्रकार सर्वोत्तम रूप में उपयोग किया जाय?

आर्थिक स्थिति का जनसंख्या से चोली-दामन का रिश्ता है। बढ़ती हुई जनसंख्या तथा मँहगाई ने आज तक भारत देश को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गरीब देश बना रखा है। विकास एवं उन्नति की हर यात्रा असफल घोषित हो गयी।

अर्थतंत्र की यह पीडा हिन्दी कहानी को परिवर्तित दृष्टिकोण, कथ्य, शिल्प और भाषा देने के लिये काफी थी- इस आर्थिक स्थिति में नई कहानी ने रूप धारण किया। कमलेश्वर ने इस विषय पर बखूबी लिखा।

ई) धार्मिक एवं सांस्कृतिक :-

किसी भी देश के धर्म और संस्कार साथ-साथ ही चलते हैं। जिस प्रकार राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक मान्यताएँ खण्डित हुई, उसी प्रकार धार्मिक एवं सांस्कृतिक विश्वासों का भी खण्डन हुआ।

भौतिकवादी दर्शन एवं विज्ञान की प्रगति से लोगों का पारलौकिक भय समाप्त प्राय: हो गया। स्वर्ग-नरक, पाप-पुण्य, भक्ति-भावना आदि का मानव के लिये अर्थ ही न रहा। जीवन-शैली विज्ञान की देन हो गई। चिकित्सा तकनीकी, उद्योग इत्यादि क्षेत्रों में वैज्ञानिक प्रगति की शक्ति ने उसे अधिक प्रभावित किया। परम्परागत मूल्य बिखर गये। शिक्षा के प्रचार ने उन मान्यताओं को समाप्त कर दिया। आस्थावान बुजुर्गो का वर्ग एवं आस्थाहीन नवयुवकों का टोला दोनों मिलकर विचित्र मूल्यों की रचना कर रहे थे। बदलती मान्यताएँ एवं मूल्य नई कहानी के आविर्भाव का कारण बन रहे थे।

धार्मिक विश्वासों के खण्डन के साथ-साथ सांस्कृतिक चिन्तन में भी परिवर्तन हुआ। मनुस्मृति प्रदत्त वर्ण व्यवस्था पर से लोगों का विश्वास उठ गया।

संविधान ने सब धर्म, जातियों को एकता दी थी । मनु का दिया वर्णाश्रम धर्म उन्हें अर्थहीन प्रतीत हो रहा था । हरिजन, अनुसूचित जन-जातियाँ, जंगली पिछडी हुई कौमों को संविधान ने बराबरी दर्जा व अधिकार दिये । वर्णव्यवस्था के अनुसार कर्म का सिद्धांत परिवर्तित हो गया । मानसिक विकास की आवश्यकता को दृष्टि में रखकर रेडिओ, टेलिफोन, नृत्य, संगीत के कई साधन सरकार द्वारा जुटाये गये । संगीत एवं नाट्य अकादमियों की स्थापना भी की गई । लोक नृत्य एवं संगीत को भी बढ़ावा मिला । साहित्य और कला के क्षेत्र में प्रगतिकर लोक जीवन में सांस्कृतिक चेतना उत्पन्न करने का प्रयास किया गया ।

वास्तविकता तो यह है कि स्वतंत्रता के बाद की युवा पीढ़ि मूल्यों के अभाव में वैचारिक और सैद्धान्तिक अराजकता के वातावरण में पनप रही हैं । ये पीढी बौद्धी क्रान्ति, उथल-पुथल और विघटन के युग से गुजर रही है ।

इन सभी परिवर्तनों के कारण स्वातंत्र्योत्तर पीढ़ि का रहन-सहन, चिन्तन, दृष्टिकोण, जीवन शैली सभी कुछ परिवर्तित हो गया ।

कुल मिलाकर राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिवर्तन इन सबके सम्मिलित प्रभाव ने कमलेश्वर को प्रभावित किया ।

२) कृतित्व :-

कमलेश्वर ने पद्य को छोडकर गद्य की लगभग सभी विधाओं का उपयोग किया हैं । कहानी एवं उपन्यास के अतिरिक्त उन्होंने नाट्य रूपान्तर, संस्मरण, समीक्षा, लेख, स्क्रिप्ट लेखन, संवाद लेखन आदि की रचना भी की है । पत्र पत्रिकाओं का सम्पादन एवं वैचारिक लेख आदि उनके विशेष क्षेत्र रहे हैं । उन्होंने कुछ हिन्दी इतर कहानियों के संकलन भी तैयार किये हैं । उनके लेखन की विविधता ही उनकी बहुमुखी प्रतिभा को प्रस्तुत करती है ।

उनके प्रकाशित साहित्य पर एक प्रकाश-

१.२.१ सम्पादक कमलेश्वर :-

साहित्य सृजन के साथ साथ कमलेश्वर जी ने पत्रकारिता एवं सम्पादन के कार्य को विशेष महत्त्व दिया है। सर्वप्रथम वे उपेन्द्रनाथ अश्क के 'संकेत' में सम्पादक रहे। 'संकेत' के माध्यम से उन्होंने प्रगतिशील रचनात्मकता को एकत्रित करने का महत्त्वपूर्ण प्रयास किया है। इस वक्त अश्कजी सिर्फ नामधारी प्रधान सम्पादक थे। इस के बाद आपने 'नई कहानियाँ' का सम्पादन कार्य किया, जो कहानी साहित्य के लिए एक महत्त्वपूर्ण देन के रूप में है। इस के बाद दिल्ली से निकलनेवाले साप्ताहिक पत्र 'इंगित' का सम्पादन कार्य किया है, जो साहित्यिक पत्र नहीं था। साथ ही इंगित के द्वारा अपने तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक विषयोंपर अपनी टिप्पणियाँ प्रकाशित करते रहे। इन विषयोंपर सार्थक टिप्पणियों के लिये उन्होंने 'पर्यवेक्षक', 'संजय', 'हरिश्चंद्र', 'सन्मित्र सिन्हा' आदि उपनामों का उपयोग किया।

कमलेश्वर ने 'नई कहानियाँ' के सम्पादन के माध्यम से नये कथाकारों को हमेशा प्रोत्साहित किया है। साथ ही प्रगतिशील रचनात्मकता को रेखांकित करते हुए साहित्यिक समस्याओं को भी उजागर किया हैं। 'रात की बाहों में' और 'मेरा हमदम मेरा दोस्त' जैसे स्तंभों के द्वारा लेखक को एवं साहित्यकारों के जीवन के अंतरंग को पाठकों के लिए प्रस्तुत किया है। इससे आपके साहित्यिक सम्पादन का परिचय हमें होता है। कमलेश्वर ने 'समकालीन कहानी विशेषांक' द्वारा नये-पुराने सभी लेखकों को एकत्रित करते हुए कहानी साहित्य के अंतर्गत कहानीकारों को अपने-अपने विचारों को अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त करा दिया। 'सारिका' के माध्यम से कमलेश्वर के सम्पादक व्यक्तिमत्व का पूर्ण विकास हुआ है। 'सारिका' के सम्पादन द्वारा हिन्दुस्थान के विभिन्न भाषाओं को कहानी लेखन के साथ जोडने का आत्मीयता से कार्य किया है। 'सारिका' के माध्यम से सन् १९७४ ई. से सन् १९७५ ई. तक दस 'समान्तर कहानी विशेषांक' प्रकाशित करने का गौरवपूर्ण कार्य किया है। इन विशेषांकों में वे सम्पादककीय के रूप में 'मेरा पन्ना' के अंतर्गत अपनी विचारधारा को टिप्पणियों द्वारा अभिव्यक्त करते

रहे । साथ ही 'गर्दिश के दिन' के अन्तर्गत लेखकों के निजी अनुभवों को प्रकट करते रहे ।

अब (सन १९९७ ई.) से कमलेश्वरजी ने मध्यप्रदेश के दैनिक समाचार पत्र 'भास्कर' को सँभाला है । इस पत्र को लोकर्पित करते हुए प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयीजी ने कमलेश्वर के विषय में कहा है कि, ''कमलेश्वर संकट के समय खरे उतरते हैं ।'' साथ ही उन्होंने कमलेश्वरजी को प्रतिबद्ध साहित्यकार-पत्रकार कहा है ।

उपर्युक्त कमलेश्वर के पत्रकारिता यात्रा से यह स्पष्ट होता है कि, वे साहित्य सृजन के साथ-साथ साहित्यिक सम्पादन के महत्त्वपूर्ण कार्य से हमेशा जुडे रहे हैं ।

१.२.२ कहानीकार कमलेश्वर :-

कमलेश्वर सन् १९५० ई. के बाद के श्रेष्ठ कहानीकार के नाम से हिन्दी कहानी साहित्य में जाने-पहचाने जाते हैं । 'नयी कहानी' और 'समांतर कहानी' आन्दोलन द्वारा हिन्दी कहानी को एक विकास की दिशा देकर आम आदमी के आसपास बदलते हुए परिवेश और उसके द्वारा भोगे जानेवाले यथार्थ को ईमानदारी से रेखांकित किया है । इस सन्दर्भ में डॉ. रेखा शर्मा का मन्तव्य है कि, **''नयी कहानियों से लेकर समांतर कहानियों तक कमलेश्वर का विकास एवं संवेदनशील लेखक का अनिवार्य और समय संगत विकास है । समय के अनुरूप अपनी अभिव्यक्ति को ढालने की उनकी सहज कोशिश रही है ।''** [२९] दु:ख दर्द, अभावग्रस्त जीवन, संषर्घ आदि समस्याओं की पकड इनके कहानियों में है । उनकी हर कहानी मानवी जीवन के सन्दर्भ से जुडी हुई है । इस विषय में दुष्यंतकुमार ने कहा है, **''उसकी हर कहानी उसके जीवनानुभवों में से निकली है...उसने पढ-पढकर सक्रान्ति को नहीं झेला है, बल्कि स्वयं जिया है ।''** [३०]

कमलेश्वर की कहानियों को स्थूल रूप में दो हिस्सों में विभक्त किया जा सकता है- कस्बे एवं देहाती परिवशे की कहानियाँ और महानगरीय परिवेश की कहानियाँ । लेकिन उन्होंने 'मेरी प्रिय कहानियाँ' कथा संग्रह की भूमिका में अपने लेखन के तीन दौर बतलाये है, जो उनके कहानी विकास-यात्रा के अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

"उनकी कहानियों का पहला दौर सन् १९५२ ई. में शुरु हो जाता है और सन् १९५८ ई. मे समाप्त ।" [31] कमलेश्वर की पहली कहानी 'कामरेड' सन १९४८ ई. में अप्सरा पत्रिका में प्रकाशित हुई- यहाँ से उनकी कहानी यात्रा शुरु हुई । इस दौर की कहानियों में मुख्यत: राजा निरबंसिया, देवा की माँ, मुर्दे की दुनिया, सीखंचे, कस्बे का आदमी, नीली झील, पीला गुलाब, भटके हुए लोग आदि हैं । इस दौर की कहानियों का सृजन मैनपुरी तथा इलाहाबाद में हुआ है । इन कहानियों में कस्बाई जीवन की त्रासदी को अभिव्यक्त किया गया है ।

~~कमलेश्वर~~ ८

अ) राजा निरबंसिया :-

कमलेश्वर का पहला कथा-संग्रह है, जिसमें कुल सात कहानियाँ सम्मिलित हैं। देवा की माँ, पानी की तसवीर, धूल उड जाती है, सुबह का सपना, मुरदों की दुनिया, आत्मा की आवाज और राजा निरबंसिया ।

इस कथा संकलन में सबसे सशक्त एवं प्रथम कहानी है- राजा निरबंसिया। जिस में मध्यवर्ग के आम आदमी के वैयक्तिक जीवन एवं दाम्पत्य जीवन की समस्याओं के साथ आर्थिक विपन्नता से जुझते हुए जगपति और चन्दा के दाम्पत्य जीवन में आए हुए कम्पांउडर बच्चनसिंह के व्यक्तित्व से समझा जा सकता है । इस कहानी के संदर्भ में डॉ. रामदरश मिश्र का कहना है कि, **''राजा-निरबंसिया' कमलेश्वर की शक्ति का इजहार करती हुयी आई थी । वास्तव में इसी कहानी से इन्हें पहले-पहल ख्याति मिलि। कमलेश्वर की यह पहली श्रेष्ठ कहानी थी और आज भी श्रेष्ठ बनी हुई है । यह कहानी कमलेश्वर के कहानीकार की अपनी शख्सीयत का पूरा संकेत देती है ।''** [३३]

इस संग्रह में 'देवा की माँ' कहानी में एक माँ की पीडा का जो पति और पुत्र के द्वंद्व में फसी हुई है, इसका चित्रण किया गया है । एक भारतीय नारी के पारिवारिक समस्याओं को यह कहानी उजागर करती है । तो 'सुबह का सपना' कहानी में युद्ध की क्रुरता और शांति की माँग को मानवीय दृष्टि से दो बच्चों के खेल द्वारा रखांकित किया गया है ।

'पानी की तसवीर' में प्रेम के संघर्ष के बीच एक आदर्श की ओर संकेत किया गया है, तो 'मुरदों की दुनिया' एक नये परिवेश में मनुष्य की करुणा एवं घृणा को अभिव्यक्त करती है ।

आ) कस्बे का आदमी :-

'राजा निरबंसिया' प्रकाशित होने के बाद आठ के महिने के अन्तराल में दूसरा कथा संग्रह 'कस्बे का आदमी' प्रकाशित हुआ है । इसमें तीन दिन पहले की रात,

गर्मियों के दिन, भटके हुए लोग, चायघर, सीखंचे, इन्सान और हैवान, गाय की चोरी, नौकरी पेशा, सच और झूठ, बेकार आदमी, थानेदार साहब और कस्बे का आदमी कुल ग्यारह कहानियाँ हैं ।

'तीन दिन पहले की रात' में 'मीना' के जीवन द्वारा अच्छी नौकरी और निजी व्यक्ति बनाए रखने के संघर्ष को रूपायित किया है । 'इन्सान और हैवान' में एक बेघर युवक की यातनाएँ और मनुष्यता के साथ पुलिस (व्यवस्था का प्रतीक) की नीचता को स्पष्ट किया गया है । तो 'कस्बे का आदमी' में कस्बे के सहृदयतापूर्वक संस्कार को महाराज और तोते के माध्यम से व्यक्त किया है, जो तोते से प्यार तो करता है, मगर अपनी असहायता में उसके प्रति दयनियता भी व्यक्त करता है ।

इस कहानी संग्रह की भूमिका में कमलेश्वर लिखते हैं कि, **"इस संग्रह की कई कहानियों में कस्बे के जीवनचित्र है । किसी क्षेत्र के प्रति इतना लगाव 'व्यापकता' में बाधा माना जा सकता है, पर मैं यह स्वीकार नहीं कर पाता । लेखक का मानस भी एक ही होता है, उसीसे सारी रचनाएँ निःसृत होती है, यदि विविध और व्यापक हो सकती है- तो क्षेत्र विशेष उस में सहायक ही होगा, बाधक नहीं ।"** [३४]

इ) खोई हुई दिशाएँ :-

इस कथा संकलन में जॉर्ज पंचम की नाक, पीला गुलाब, खोई हुई दिशाएँ, एक अश्लील कहानी, प्रेमिका, दिल्ली में एक मौत, एक थी विमला, साँप, एक रुकी हुई जिन्दगी, दुःख़भरी दुनिया और पराया शहर कहानियाँ हैं ।

'खोई हुई दिशाएँ' में कस्बे से आए हुए चन्दर के महानगरीय यांत्रिकता से भरे हुए जिन्दगी में देहाती व्यक्ति के कष्ट को कहानी का मुख्याधार बनाया गया है । तो 'दिल्ली में एक मौत' कहानी में महानगरीय जीवन में मानवीयता के होते हुए ऱ्हास को स्पष्ट किया गया है । 'पराया शहर' में देहाती मनुष्य को महानगरीय परिवेश पराया लगता है क्योंकि वह अपने मन से अपने मिट्टी से जुड़ा हुआ होता है । साथ ही पिता-

पुत्र के टूटते हुए पारिवारिक रिश्ते की ओर संकेत किया है । इस संग्रह से हमें स्पष्टता से ज्ञात होता है कि-कमलेश्वर की कहानी यात्रा अब कस्बे से शहर की ओर आयी है । इस संग्रह मे महानगरीय परिवेशगत् समस्याओं पर कहानियों का सृजन किया गया है।

ई) 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' :-

इस कहानी संग्रह में कमलेश्वर के बहुचर्चित दस कहानियों को संकलित किया गया है । जिसमें कोहरा, राजा निरबंसिया, चप्पल, गर्मियों के दिन, खोई हुए दिशाएँ, नीली-झील, इंतजार, दिल्ली में एक मौत, माँस का दरिया और बयान हैं ।

इन दस कहानियों के कथानक छोटे और चरित्र-चित्रण संक्षेप में भले ही है, लेखक अपनी कहानियों के पात्रों को पूरा कर देने में सफल रहा है । प्रत्येक कहानी की शैली और शिल्प दोनो भी सुन्दर है । इसलिए वे लिखते हैं कि, "**कहानियाँ लिखते हुए हमेशा मुझे अपनी अधीरता और अक्षमता का एहसास हुआ है । मेरी कहानियों में कोई एक बात पूरी ही नहीं पडती । कई-कई बातें मिलकर एक बात बनती हे । कई घटनाएँ मिलकर एक घटना बनती है । कई दुःख मिलकर एक दुःख बनता है.... कई प्रतिक्षाएँ मिलकर एक प्रतीक्षा बनती है । कई शब्द मिलकर एक शब्द बनता है । इसीलिए कहानी लिखना मुझे कठीन लगता है ।**" [३५] इन सभी कहानियों में नई पीढी की अनास्था, घुटन, व्यवस्था की चुनौति, विद्रोह आदि समस्याओं को उजागर किया गया है ।

उपुर्यक्त कथा संग्रह के अलावा 'माँस का दरिया', 'इतने अच्छे दिन', 'बयान', 'जार्ज पंचम की नाक', 'कोहरा', 'कथाप्रस्थान' और 'मेरी प्रिय कहानियाँ' कमलेश्वर के प्रकाशित कहानी संग्रह हैं ।

१.२.३ उपन्यासकार कमलेश्वर :-

आज के बहुचर्चित उपन्यासकारों में कमलेश्वरजी है । इस की वजह यह है कि उनके उपन्यासों की कथा-वस्तु ग्रामीण परिवेश से लेकर महानगरीय परिवेश के

विभिन्न क्षेत्रों की समस्याओं को उद्घाटित करती है । आम आदमी के जीवन की विसंगतियों को उन्होंने अभिव्यक्ति का साधन बनाया है । इस सन्दर्भ में डॉ. अमर प्रसाद जायसवाल का मत है कि, "**......सर्व सामान्य व्यक्ति के जीवन को ही कमलेश्वर ने अपनी कलम से चित्रित किया है । उनकी कथा-कृतियों में आम-आदमी के दैनिक जीवन के मसले जैसे रोजी-रोटी, मजदूरी एक ओर है, तो दूसरी ओर आस्था-अनास्था, प्रेम, कलह आदि यथार्थ रूप में चित्रित हुई है ।**" [३६] आपके उपन्यासों में निम्न मध्यवर्ग और मध्य मध्यवर्ग के जीवन की त्रासदी एवं समस्याओं का स्वाभाविक चित्रण हुआ है, जो कस्बाई और महानगरीय यथार्थ जीवन की पोल खोलता है । इस विषय में घनश्याम मधुप का कहना है कि, "**कस्बाई निम्न-मध्यवर्ग वैषम्य, शोषन और सामाजिक असमानता का चित्रण लेखक ने अपनी प्रगतिशील विचारधारा के आधार पर किया है ।**" [३७] कमलेश्वर ने अपने उपन्यासों द्वारा युग-सत्य को सुक्ष्मता के साथ नये सामाजिक यथार्थगत् परिवेश को चित्रित किया है, जो हिन्दी उपन्यास साहित्य के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है । उनके निम्नांकित उपन्यास साहित्यद्वारा यह स्पष्ट होता है ।

अ) 'एक सडक सत्तावन गलियाँ' :-

'एक सडक सत्तावन गलियाँ' यह कमलेश्वर का सर्वप्रथम उपन्यास सन् १९६१ ई. में प्रकाशित हुआ है । एक सौ बीस पृष्ठ का यह उपन्यास पुस्तक रूप में प्रकाशित होने से पूर्व सन् १९५७ ई. में 'हंस-१' में प्रकाशित हुआ था । बाद में गलतीवश् यही उपन्यास पंजाबी पुस्तक भाण्डार, दिल्ली द्वारा 'बदनाम गली' शीर्षक से प्रकाशित हुआ ।

यह उपन्यास आकार की दृष्टि से लघु होते हुए, कथावस्तु की दृष्टि से व्यापक है । उपन्यास की कथावस्तु हिन्दुस्थान की आजादी के पूर्व से लेकर आजाद हिन्दुस्थान की समस्याओं को उजागर करती है । स्वाधीनता से पूर्व निम्न मध्यवर्ग ने स्वाधीनता के विषय को लेकर जो सुनहरे सपने संजोये थे, वे आजादी के बाद कैसे टुट

गये, इसका चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। जैसे स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेकर सांप्रदायिक एकता का कार्य करनेवाले 'मास्टर हबीब' को आजादी के बाद पेट की आग बुझाने के लिए दर-दर भटकना पडा।

इस उपन्यास में उत्तर प्रदेश के मैनपुरी कस्बे के आम जनता की जिन्दगी को विभिन्न परिप्रेक्ष्य से अभिव्यक्त किया गया है। उनके सुख-दुःख, आशा-निराशा, कस्बे में व्याप्त सांप्रदायिक तनाव, झूठी नेतागिरी, कम्युनिष्ठ-काँग्रेस विवाद, जनसंचार माध्यमों की उदासीनता, प्रेम विषयक समस्याएँ, ड्रायवरों की समस्याएँ, धार्मिक अंधश्रद्धा और कर्मकाण्ड आदि वैयक्तिक जीवन से जुड़ी समस्याओं के साथ-साथ सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक समस्यओं को सुक्ष्मता से चित्रित किया गया है। इस उपन्यास में असहाय और मजबूर नारी की सौदेबाजी को मार्मिकता से व्यक्त किया गया है। भारतीय पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था में स्त्री को अपमानित, निम्नस्तर का जीवन व्यवहार, वेश्या व्यवसाय आदि समस्याओं को व्यक्त किया गया है। जैसे गेंदा कवि ने असहाय 'बंसिरी' को पाँच सौ रुपयों में रंगीले को बेचा था।

इस उपन्यास में मैनपुरी कस्बे में होनेवाले रामलीला और नाटक कम्पनी के कार्यक्रमों के चित्रण के साथ-साथ धार्मिक अंधश्रद्धा तथा कर्मकाण्ड की पोल खोल दी है। इस के द्वारा कमलेश्वर ने धर्म में छिपे हुए कर्मकाण्ड, अमानवीय प्रथा, रूढ़ि और परम्पराओं का विरोध किया है।

'एक सडक सत्तावन गलियाँ' उपन्यास में पात्रों की संख्या अधिक मात्रा में होने पर भी वे पाठक को बोझील नहीं होते। औपन्यासिक कथा वस्तु की सफलता के लिए वे महत्त्वपूर्ण ही हैं। इसके पात्र एवं परिवेश उत्तरी भारत के कस्बे के होनेपर भी समूचे भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं। इससे ही निःसंदेह कमलेश्वर का यह प्रथम प्रयास श्रेष्ठ और प्रशंसनीय है।

आ) 'डाक बंगला' :-

'डाक बंगला' कमलेश्वर का दूसरा बहुचर्चित उपन्यास है। इस उपन्यास का प्रथम संशोधित संस्करण राजपाल एण्डसन, दिल्ली द्वारा सन् १९७५ ई. में प्रकाशित हुआ है।

'डाक बंगला' उपन्यास में कमलेश्वर ने नायिका 'इरा' नामक युवती की जीवनानुभूती की त्रासदी को आत्मकथात्मक शैली में प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। 'डाक बंगला' वास्तव में प्रतीक रूप में प्रयुक्त हुआ है। इस उपन्यास की कथावस्तु नायिका 'इरा' और पाँच पात्रों के आपसी सम्बन्धों को लेकर है। 'इरा' के पिता फौज में थे और इरा बिना माँ की बच्ची नौकरानियों के हाथों पलकर बडी हुई है। महाविद्यालय के दिनों में वह विमल नाम के कलाकार से प्यार करती थी, लेकिन विमल को 'इरा' के व्यवहार पर संदेह होता है। परिणामतः विमल बम्बई भाग जाता है। यहाँ से इरा के स्वभाव में परिवर्तन होता है। वह घर की तलाश में महेन्द्र बतरा, डॉक्टर चन्द्रमोहन जैसे प्रौढ व्यक्ति के साथ विवाह करती है। दुर्भाग्यवश चन्द्रमोहन विद्रोहियों की गोली का शिकार बनकर मर जाता है। इसी वक्त बीमार क्षयग्रस्त विमल बम्बई से आता है। तो भी 'इरा' उसे जी-जान से प्यार करते हुए उसकी शुश्रृषा करती है। लेकिन इसी बीमारी के कारण विमल का देहांत हो जाता है। अब रह जाती है- जीवन की परीक्षा में हारी-टूटी 'इरा'। उसके माध्यम से एक साधारण नारी का विपत्तिपरक जीवन और उसके संघर्ष को अर्थात् नये मूल्यों और परम्परागत् मूल्यों के संघर्ष को स्पष्ट किया गया है। इस सन्दर्भ में नरेन्द्र चतुर्वेदी ने कहा है, **"इरा की जिन्दगी मात्र 'डाक बंगला' ही नही वरन् एक यात्रा है। वह वर्तमान की देहली पर हर बार अतीत को काटकर खडी होती है, पर कुछ कदम चलते ही अतीत उसे बबूल वन में छोड जाता है। ..... इरा फिर अकेली रह जाती है।"** [३८] 'डाक बंगला' के पात्र आर्थिक संघर्ष करते हुए जिजिविषा को बनाए रखते हैं। नायिका 'इरा' और सिला को आर्थिकता से मजबूर होकर पूँजपातियों से संपर्क करने पडते हैं। पूँजपाति आर्थिक मजबूरी का फायदा उठाते

हुए अपनी शारीरीक जरूरतें पूरी करते हैं। आर्थिक विपन्नता से त्रस्त नारी का यथार्थ चित्रण उपन्यास में हुआ है।

'इरा' कश्मीर यात्रा के दौरान तिलक और सोलंकी के साथ कुछ दिनों के लिए आडू के 'डाक बंगले' में रहती है। अपनी जीवनानुभवों को वह तिलक से इस डाक बंगले में सुनाती है। यहीं 'डाक बंगला' शीर्षक की सार्थकता और प्रतीकात्मकता स्वयंमेव स्पष्ट हो जाती है।

इ) 'लौटे हुए मुसाफिर' :-

भारत-पाकिस्तान विभाजन की समस्या को लेकर हिन्दी भाषा में बहुत मात्रा में कथा-साहित्य लिखा गया है। इस समस्या के विषय की समानता होने पर भी इसकी यह विशेषता है कि इस में यथार्थवादी सूक्ष्म दृष्टि से समस्याओं के मूल से लेकर अंत-तक चित्रण किया गया है। इस सन्दर्भ में डॉ. सच्चिदानंद राय का कथन है कि, **''लौटे हुए मसाफिर' में देश-अनुराग, आत्मविश्वास एवं कर्तव्यपरायणता का आज के गतिशील जीवन में आकर्षक चित्रण प्रस्तुत हुआ है।''** [३१] उपन्यास में एक छोटे से बस्ती में विभाजन के पूर्व, विभाजन के समय और विभाजन के बाद जो भी परिवर्तन होते हैं, उसका विवेचन किया गया है।

'लौटे हुए मुसाफिर' उपन्यास की शुरूआत ही स्वातंत्र्योत्तर भारत के बस्ती के समस्याओं से होती है और उपन्यासकार हमें बस्ती के अतीत में ले जाते हैं, जहाँ साम्प्रदायिक एकता का चित्र हमारे सामने आता है। हिन्दु त्यौहारों में मुस्लिमों का सहयोग और मुस्लिमों के त्यौहारों में हिन्दुओं का योगदान। हिन्दु-मुस्लिम में आपसी सहयोग की भावना थी, क्योंकि वहाँ की जनता संकुचित साम्प्रदायिकता और राजनीति से अनभिज्ञ थी। कुछ दिनों बाद ही वहाँ अंग्रेजराज आया तो उनके अत्याचारों के विरोध में हिन्दु-मुस्लिम ने मिलकर संघर्ष किया। इस विषय में डॉ. अमर जायस्वाल का कथन है कि, ''वे लोग आजादी की लडाई में साथ लढे थे, बँटवारे से एक दूसरे के दुश्मन हो गये थे।''

ऐसे इस सुनहरे-एकता बने बनाए रखनेवाले चकवों की बस्ती में मकसूद और सियासी कारकून यासीन आ जातें हैं, और आते ही वे नफरत की आग आम लोगों के मन में भडकाते है । यह नफ़रत की एक चिनगारी हिन्दु-मुसलमानों में दरार निर्माण का सबब बन जाती है । इस कार्य के लिए राजनीति और धर्म का सहयोग लिया गया। जिस मंदिर में पाठशला हुआ करती थी, वहाँ हिन्दुओंकी सभाएँ होने लगी, तो मसजिद् जैसे पवित्र स्थान में हिन्दु और काँग्रेस पार्टी के प्रति नफ़रत की आग फैलाने का अपवित्र कार्य किया जाने लगा । मौलाना, लिंग और संघ परिवार वालों ने आपसी वैरभाव को उत्तेजित करने का कार्य किया । परिणामत: हुआ यह कि स्वतंत्र पाकिस्तान की माँग की गयी ।

विभाजन के बाद अमीर मुसलमान पाकिस्तान की ओर जाने लगे, लेकिन दीन मुसलामनों का क्या? वे पाकिस्तान तक जा सके? ...... क्योंकि उनके पास था, अर्थ का अभाव । जो पाकिस्तान जाकर गारेबी का खात्मा करना चाह रहे थे, लेकिन हुआ यह कि साम्प्रदायिक शक्तियों ने उनका ही खात्मा कर दिया ।

चौदह-पन्द्रह वर्षों बाद इसी बस्ती में जिन्होंने बचपन के दिन गुजारे थे, वे नौजवान लौटकर उस दिन की याद कर रहे है- जिनके माता-पिता बस्ती के निवासी थे, लेकिन पाकिस्तान और संपन्नता के सपनों को लेकर बस्ती से निकल गए मगर पाकिस्तान तक नहीं जा सके । इन नौजवानों को देखकर बस्तीवाले के साथ नसीबन बहुत खुश है । स्वयं कमलेश्वर के शब्दों में, **''नसीबन खुशी से रो पडी थी । वे सब बशीर, बाकर, रमजान, फत्ते वगैरह जवान होकर लौट आये थें ।''** [४०]

इस उपन्यास का सम्बन्ध मानव मन के साथ अत्याधिक यथार्थवादी है । यहाँ प्रदेश महत्त्वपूर्ण नही है, महत्त्वपूर्ण है बस्ती की प्रातिनिधिकता और मनुष्य के मूल स्वभाव की समस्या । इस विषय में डॉ. सूर्यनारायण रणसुभेजी का प्रमाण है कि, **''उपन्यास में चर्चित बस्ती भारत के किसी भी शहर की हो सकती है ।''** [४१] उपन्यास में देश विभाजन से उत्पन्न- मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक समस्याओं का विवेचन हुआ हैं ।

ई) 'तीसरा आदमी' :-

'तीसरा आदमी' उपन्यास में वर्तमान समस्याओं का सुक्ष्मता से चित्रण हुआ है । देहाती आदमी की महानगरों में रहने की लालसा को महानगरीय सभ्यता ठुकरा देती है क्योंकि महानगरों में मानवीय संवेदना नष्ट हुई है । मानवी मूल्यों का ह्रास हुआ है । महानगरीय जीवन यंत्रवत् हुआ है । देहाती और महानगरीय मानवी जीवन का सशक्त एवं वास्तविक चित्रण इस उपन्यास में हुआ है । कस्बाई और महानगरीय मानवी जीवन व्यवहार के सन्दर्भ में डॉ. पारुकान्त देसाई ने कहा है कि, ''जहाँ महानगर का व्यक्ति इसके साथ समझदारी पूर्वक या पुरानी विचार धारा के अनुसार कायरतापूर्ण समझौता कर लेता है, वहाँ कस्बाई मनोवृत्ति का मध्यमवर्गीय पुरुष कुछ हिचक का अनुभव करता है और उसी में वह टूटने लगता है । इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है - नरेश । जो इलाहाबाद से दिल्ली आता है, क्योकि उसे इलाहाबाद छोटा शहर लगता है। इस छोटे शहर में उसे खुलकर दाम्पत्य जीवन जीने जैसा माहौल प्राप्त नहीं होता, इसलिए उसके मन में दिल्ली जैसे महानगरीय जीवन के प्रति आकर्षण निर्माण होता है। वह अपनी आकाशवाणी की नौकरी का तबादला दिल्ली करवा लेता है । लेकिन मजबूरन दिल्ली में आर्थिक अभाव तथा मकान की समस्या में जीवन की साधारण आवश्यकता पूर्ति के लिऐ रिश्ते के भाई सुमंत के साथ रहने को बाध्य हो जाता है । यही मजबूरी उसके दाम्पत्य जीवन में अभिशाप बन जाती है । पति पत्नी के जीवन में सुमंत एक समस्या बन जाता है । अर्थात् सुमंत यह तीसरा आदमी है । इस तीसरे आदमी के बारे में उपन्यास के मुखपृष्ठ में घोषित किया है कि, **''प्रेम अथवा प्रतिद्वन्द्विता के नाते 'तीसरा आदमी' आदिकाल से स्त्री और पुरुष के बीर आता रहा है, लेकिन कमलेश्वर का तीसरा आदमी आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों की उपज है ।''** [४२] यही परिस्थितिवश नरेश के मन में निर्मित हुआ संदेह उसके पारिवारिक जीवन में जहर बन जाता है । 'तीसरा आदमी' उपन्यास भारतीय परम्परा के अनुसार संयुक्त परिवार का अनुमोदन करता है । विभक्त परिवार दाम्पत्य-जीवन तक ही सीमित होते हैं । इस

कारण सुख-दु:ख में साथ देनेवाले आत्मीय मुनष्यों की कमी होती है । इस कमी के कारण मनुष्य मानसिक टूटन का अनुभव करता है । विभक्त परिवार दाम्पत्य-जीवन तक ही सीमित होते हैं । इस कारण सुख-दु:ख में साथ देनेवाले आत्मीय मनुष्यों की कमी होती हैं । इस कमी के कारण मनुष्य मानसिक टूटन का अनुभव करता है । यही नरेश के जिये हुए जीवन की अनुभूति है ।

कमलेश्वर ने इस उपन्यास में निम्न मध्यवर्ग के जीवन में पारिवारिक कुण्ठाएँ तथा टूटन, पति-पत्नी सम्बन्ध, आर्थिक समस्याएँ, अटूट संदेह वृत्ति जैसे वैयक्तिक समस्याओं के साथ महानगरीय समस्याओं का भी चित्रण किया है । जिसमें मनुष्य का यंत्रवत जीवन, टूटते हुए मूल्य, बढती हुई आबादी, अकेलापन, संवेदनहीनता आदि समस्याओं को स्पष्ट किया है ।

उ) 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' :-

स्वतन्त्रता के बाद हमने जिस आर्थिक संपन्नता की आकांक्षा की थी, वह अपूर्ण रही । सुख-शान्ति की अभिलाषा समाप्त होती गयी क्योंकि देश की आर्थिक स्थिति विषम होती गयी । परिणामस्वरूप मध्यमवर्गीय परिवारों पर आर्थिक संकट आने लगे । अर्थ के अभाव की पूर्ति और आरामदायी जीवन की खोज में आम आदमी गाँव से महानगरों की ओर आकर्षित होने लगे लेकिन महानगरीय सभ्यता में आधुनिकता और वैज्ञानिक विकास के कारण मनुष्य यंत्रवत् होता गया । इस यंत्रवत् संस्कृति में मध्यमवर्गीय समाज की समस्याओं का जन्म होता है । ऐसा ही एक श्यामलाल बाबू का परिवार आर्थिक संकट का शिकार होकर विघटित होता है । जिसका यथार्थ चित्रण 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' में किया गया है । **"इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है- श्यामलाल बाबू जो अपने परिवार के साथ इलाहाबाद से दिल्ली आर्थिक विपन्नता से छुटकारा पाने हेतु आया था । परिवार में बीमार पत्नी रम्मी, दो जवान लडक़ियाँ - तारा और समीरा, एक नौजवान लड़का वीरेन आदि सदस्य हैं, जो आर्थिक संकट से संघर्ष करते हुए जीवन यापन करने का मार्ग ढूंढ़ रहे हैं ।"** [४३]

'सिंध ट्रान्सपोर्ट' कम्पनी दिल्ली में खुली तब श्यामलाल बुकिंग क्लार्क हो गया। लेकिन उसका सपना ब्रांच मैनेजर के पद आसीन होने का था, परंतु उसे स्थान नहीं मिल सका बल्कि उसे नौकरी से हटा दिया गया । आर्थिक संकट के कगार पर खडे श्यामलाल नौकरी जाने से परिवार चला पाने की क्षमता खो चुका । अपनी सामर्थ्य हीनता के बाद परिवार के संरक्षक मुखिया के रूप में वह पुत्र वीरेन को देखता है, लेकिन दुर्भाग्य वश वह भी समुद्र में डूब जाता है, वीरने के रूप में भविष्य की एक उम्मीद उसके मृत्यु से समाप्त होती गयी । आर्थिक विपन्नता के कारण श्यामलाल का परिवार बिखर गया । पत्नी रम्मी पुत्री तारा के घर नौकरानी हो गयी, तो दूसरी लड़की समीर होटल में काम करने लगी और श्मालाल नौकरी की तलाश में चौकीदार हो गया । समूचा परिवार विघटित हो जाने से किसी को किसी के प्रति आंस्था, अपनत्व, प्रेम नहीं रहा, इतना ही नहीं बल्कि स्वयं उसकी ही पत्नी उसे मेहमान की तरह मिलने आने लगी ।

श्यामलाल का परिवार अकेले का न होकर समूचे निम्न मध्यमवर्गीय समाज का प्रतिनिधित्व करता है । कई निम्न मध्यवर्ग के पुत्र-पुत्री समाजरूपी समुद्र में डूबते जा रहे हैं । लेकिन कितने ऐसे परिवार हैं, जो समाज रूपी समुद्र से वापिस लौट आएं? ..क्योंकि कई परिवार अर्थ के अभाव में फसकर निरन्तर टूटते-बिखरते जा रहे हैं । 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' में मध्यमवर्गीय समाज के सामाजिक, आर्थिक और बदलते हुए सांस्कृतिक मूल्यों के साथ वैयक्तिक जीवन के यथार्थ को चित्रित किया गया है ।

ऊ) 'काली आँधी' :-

हिन्दी के राजनीतिक समस्याओं को लेकर लिखे गये उपन्यासों में 'काली आँधी' महत्त्वपूर्ण उपन्यास हैं; क्योंकि इस उपन्यास में स्वाधीन भारत के राजनीतिक परिवेश का पूर्ण रूपेण तथा वास्तविक विवेचन किया गया है । जो उद्घाटित करता है- राजनीति में व्याप्त आंतरिक पहलु और व्यक्ति जीवन की विडम्बना ।

इस उपन्यास की नायिका 'मालती' जो राजनीति में प्रवेश करती है। राजनीति के बलबूते पर तो वह सफल हो जाती है; लेकिन पारिवारिक जीवन एवं दाम्पत्य जीवन में उसे मिल जाती है- असफलता, अपूर्णता और पारिवारिक टूटन। इस सन्दर्भ में माधुरी शाह का कथन है कि, **''जग्गी बाबू और लीली की मालती सारे देश की मालती देवी हो गयी थी। इस प्रकार जहाँ एक ओर मालती की सत्ता-आकांक्षा उसके व्यक्तिगत जीवन को समाप्त कर देती है, वहीं दूसरी ओर समूचे सामाजिक, नैतिक, राजनीतिक और मानवीय मूल्यों को भी उपेक्षित कर देती है।''** [४४] मालती के प्रति स्वाभिमानी स्वभाव के व्यक्ति होने के कारण पति-पत्नी के स्वभाव में समायोजन नहीं हो पाया। जग्गी-बाबू को न राजनीति से लगाव है, न राजनीति से मिलि झूठी प्रतिष्ठा से। दाम्पत्य जीवन में इसी कारण समझौता नहीं हो सका। मालती चाहती है कि औरों की तरह पति भी उसे सहयोग दे, लेकिन पति नैतिक, आदर्शी, ईमानदार और स्वाभिमानी होने के कारण राजनीति में नहीं आता। राजनीति में मालती पूरे तौर से राजनीति की हुई है। वह हर चीज को अपनी सफलता के लिए इस्तेमाल करना चाहती है। यही जीवन मूल्यों का संघर्ष बन जाता - पारिवारिक बिखराव का कारण।

प्रस्तुत उपन्यास में व्यक्ति जीवन की त्रासदी के साथ-साथ राजनीतिक नेता द्वारा आम लोगों की जनसेवा के बहाने व्यक्तिसत्ता स्थापित करने के लिये किये गये उपयोग पर प्रकाश डालता है। जनता को दिऐ गए वचन, सुख-शान्ति के प्रस्ताव आदि के प्रति वे कहाँ तक ईमानदार होते है, आदि बातों की पोल खोलने का कार्य करता है- मालती पात्र। नायिका मालती के विषय में माधुरी शाह ने कहा है कि, ''उपन्यास की नायिका मात्र एक व्यक्ति न होकर अपने समय के साथ जुडी हुई एक इकाई है, जिसकी प्रत्येक कृति और उक्ति युगचेतना से संपृक्त है, जैसा कि संकेत किया जा चुका है।''

ए) 'आगामी अतीत' :-

'आगामी अतीत' कमलेश्वर का लघु-उपन्यास पुस्तक रूप में प्रकाशित होने से पूर्व 'धर्मयुग' साप्ताहिक में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ था।

कमलेश्वर कृत 'आगामी अतीत' उपन्यास में एक ऐसा प्रेम-त्रिकोण है, जो आपसी सम्बन्धों को दृढ करने के प्रयास में बिखर जाता है। वास्तव में इन तीन व्यक्तियों के बिखरे जीवन की असफल गाथा ही आगामी अतीत है।

समाज द्वारा स्थापित सभ्यता में प्रवेश प्राप्ती की कामना हेतु विस्थापित अपने वर्ग से हटकर पूँजीपति समाज के परिवेश में व्यक्ति किस तरीके से सफलता के समाज के लिए गलत रास्तों को अपना लेता है, और अपने निजी जिन्दगी और वर्ग से कट जाता है, इसका मार्मिक चित्रण पात्र कमल बोस से हमें होता है। कमल बोस एक ओर चंदा से प्रगाढ प्रेम करता है परन्तु एम.बी.बी.एस. में प्रथम आने पर चन्द्रमोहन अपनी सु-पुत्री निरुपमा के लिए उसे खरीद लेता है। यही एक गलती उसके दाम्पत्य जीवन में टूटन-बिखराव का कारण बनती है। वह निरुपमा जैसे सुंदर पत्नी का शरीर से पति हो गया, लेकिन क्या उसके मन से चन्दा निकल सकी?..... डॉ. पारुकान्त देसाई का इस बारे में कथन है कि, **''निरुपमा से उसकी कभी नहीं पटी, पर झूठी शोहरत, इज्जत और सफलता के विचारों ने उसको चिपकाए रखा। .....निरुपमा के ममेरे भाई रमेन्द्र सेन के मामले में कमल के सख्त रुख को लेकर निरुपमा मात्रा से अधिक नींद की गोलियाँ खाकर आत्महत्या कर लेती है।''** [४५]

दूसरी ओर चन्दा दो-तीन वर्ष तक कमल से किये हुए वादे के मुताबिक वाट जोहती रही, लेकिन बदनामी और बीमारी के कारण लंगडे हरकारे से विवाह कर लेती है। विवाहोपरान्त वह चाँदनी जैसी सुन्दर सु-पुत्री को जन्म देती है। यही से शुरु होती है, चाँदनी की जीवन गाथा, जो माता-पिता की मृत्यु से टूटी-हारी चाँदनी जिजिविषा को बनाए भटकती रही- भटकते-भटकते वह पागलखाने में पहुँचती है। जहाँ एक खूनी जो पागलपन का ढोंग करता हुआ उसकी इज्जत उतारता है। जो उसके जीवन में बदलाव लाकर वेश्या बना देता है। यहाँ चाँदनी द्वारा कमलेश्वर ने वारांगणाओं की करूण कहानी को सूक्ष्मता से दोहराया है, जो अन्य उपन्यासों से स्पष्टता यथार्थवादी है।

इधर टूटा-हारा कमल चंदा के खोज में जाता है लेकिन उसे मिलती है- सुपुत्री चाँदनी। कमल उसे रास्तेपर लाने का प्रयास करता है। वह चाँदनी को बेटी के रूप में स्वीकार करना चाहता है, लेकिन चाँदनी के लिए वह तो मात्र सिर्फ एक ग्राहक था। इससे सम्बन्धित चाँदनी का एक वाक्य यहाँ दृष्टव्य है कि, **"तुम अमीरों के ये इश्क विश्क के चोंचले अपने लिए बेकार है। हम इश्क नहीं करते, पेट भरते है, पेट।"** [४६]

चाँदनी अपने माँ के प्रेम की हुई दुर्दशा को बार-बार याद करती है, इसीलिए उसके मन में प्रेम के विषय का कोई महत्त्व नहीं। इस उपन्यास में कमलेश्वर ने युग सत्य को उद्‌घाटित किया है, जिस पर निर्देशक गुलजार ने 'मौसम' फिल्म बनायी है, जो सफलता के आसमान पर पहुँची है।

ऐ) एक और चन्द्रकान्ता :-

'एक और चन्द्रकान्ता' उपन्यास दो भागों में विभाजित है। उपन्यासकार कमलेश्वर ने 'चद्रकान्ता' सीरियल के लिए संवाद लेखन करते हुए बाबू देवकीनन्दन खत्री से प्रेरणा लेकर 'एक और चन्द्रकान्ता' का सृजन किया है। इस सन्दर्भ में कमलेश्वर का कहना है कि, **"मैं विनत भाव से बाबू देवकीनन्दन खत्री का आभारी हूँ, क्योंकि इसकी प्रेरणा मैंने उन्ही से ग्रहन की है। मैंने 'एक और चन्द्रकान्ता' में जो कोशिश की है वह भाषायी स्तर पर एक विनम्र प्रयास है ताकि हिन्दी अधिकतम आम-फहम बन सके। हिन्दी के उदय काल मे जो सफल कोशिश हुई है, वह जारी रह सके।"** [४७] हिन्दी साहित्य के कथा परम्परा में किस्सागोई के कहानी को उपन्यासकार ने और एक बार प्रस्तुत किया है।

युद्ध पराक्रम, चमत्कार, नमक हरामी, ऐयाशी, बगावत, फंतासी, प्रतिशोध, बाधाएँ, साजिशी, कर्तव्य, मक्कारी, दोस्ती, वफादारी, तांत्रिक शक्ति, शैतानी शक्ति तथा वासनाएँ आदि कथा-उपकथाओं के दरवाजे खुलते-बंद होते हुए शृंखलाबद्ध कडियों द्वारा प्रेमाख्यान के साथ देश और समाज को उपन्यास के कथावस्तु से जुडते है।

इस उपन्यास के विषम में एक और सम्पादकीय कथन है कि, ''**कुँवर वीरेन्द्रसिंह और राजकुमारी चन्द्रकान्ता की उद्दाम प्रेमकथा को बारम्बार स्थगित करते हुए लेखक कही दो देशों की परस्पर शत्रुता के बीच संधि की कोशिश को शिरोधार्य करता प्रतीत होता है, तो कहीं भ्रष्टाचार, राष्ट्रद्रोह की प्रतिच्छाया वाली उपकथाओं के सृजन में व्याप्त दिखता है । समय के साथ निरंतर बहने और रहनेवाली 'एक और चन्द्रकान्ता' की इस महाकथा में महानायकों का चिरंतन संघर्ष यहाँ मौजूद है, उनका समाधान नहीं । अर्थात यह एक अनंत कथा है जो यथार्थ और कल्पना की देह आत्मा से सृजित और नष्टीकृत होती रहती है, कहना न होग कि यह हिन्दी की एक समकालीन ऐसी 'तिलिस्मी' उपन्यास-शृंखला है जो हमारे अपने ही अविष्कृत रूप-स्वरूप को प्रत्यक्ष करती है ।**'' [४८]

जिस तरह कमलेश्वर ने बाबू देवकीनन्दन खत्री के उपन्यास 'चन्द्रकान्ता' से अलग 'चन्द्रकान्ता' सीरियल लिखी उसी तरह 'चन्द्रकान्ता' सीरियल से अलग 'एक और चन्द्रकान्ता' के वृत्तांत को लिखा । इसका प्रमाण यहीं है कि पाठकों ने अखण्ड पठनीयता से उपन्यासकार की प्रतिभा को सराहा है ।

ओ) 'कितने पाकिस्तान' :-

कमलेश्वर का हाल-ही में प्रकाशित नया उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है । पाकिस्तान यहाँ प्रतीक है यह उपन्यास के शीर्षक से ही स्पष्ट होता है । प्रतीकात्मकता के विषय में पुरुषोत्तम अग्रवाल ने लिखा है कि, ''**उन्माद की राजनीति का रूपक, साझे सांस्कृतिक अनुभव की विरासत को नकारने का रूपक। इसीलिए पाकिस्तान उपन्यास की संचना में बहुवचन में आता है । इस रूपक का प्रतिपक्ष है- मनुष्यों के बीच-विविध सांस्कृतिक परम्पाराओं के बीच संवाद ।**'' [४९] यही संवाद लेखन की शैली में उपन्यासकार कमलेश्वर ने तो कलम तोड दी है, जिसे उपन्यास में प्रभावी ढंग से पिरोया है ।

इस उपन्यास का मुख्य पात्र है- अदीब, वह एक ऐसा वास्तविक व्यक्तिपात्र है, जो ऐतिहासिक घटनाओं का जिता-जागता मूर्त दस्तावेज । इतिहास- अदीब की अपनी जिन्दगी से रिसता हुआ उपन्यास में व्यापता है । विद्या और अदीब के प्यार से लेकर जैनब-और बूटासिंह, अदीब और सलमा की प्रेमकथा तक । साथ ही इस उपन्यास में दारशिकोह ऐसा पात्र है, जिसकी पराजय से पाकिस्तानी विचारधारा का उदय होता है यहाँ से ही पाकिस्तान प्रतीक न होकर ऐतिहासिक घटनाओं का ठोस साक्षी होता है। इस घटनाक्रम से ही उपन्यास की कथावस्तु का व्यापकता से विकास होता है ।

इस उपन्यास की शुरु से गिलगमेश की यात्रा शुरु होती है, जो देवताओं की कूटनीतिक चालों से टकराते हुए खोजता है- मृत्यु की औषधी । और अन्त में पहुँच जाता है - अंधे कबीर के पास । यहाँ अंधा कबीर एक ऐसा प्रतीकात्मक पात्र है, जो 'वैष्णव जन तो तेने कहिए' का भजन गाता हुआ शान्तिदूत बनकर पोखरण और चगाई जाना चाहता है । वह विश्वशान्ति की कामना करता है । स्वयं कलमेश्वर के शब्दों में, ''बोधीवृक्ष की जडे नीलकंठ की तरह सारा विष पी लेती है.... पहला बोधीवृक्ष में पोखरण में लगाऊंगा, फिर सरहद पार करके दूसरा वृक्ष में चगाई की पहाडियों में लगाऊँगा ।''

इस उपन्यास में ऐतिहासिक घटनाओं को कल्पना के साथ जोडकर कथा वस्तु को विकसित किया गया है, लेकिन कई घटनाएँ ऐसी है, जो तार्किकता से संगत एवं ऐतिहासिक हैं । जैसे स्वयं कमलेश्वर ने जिन्ना के प्रसंग में लिखा है, **''जनता की भावनाओं को भडाकाकर पैदा किये गए आंदोलनों की यही ताकत और कमजोरी है..... एक बार जो कह दिया गया, वह बाद में चाहे अनुचित और गलत लगने लगे, पर उसे बदला नहीं जा सकता... यही बात जिन्ना के साथ हुई है । उन्होंने बडी शिद्दत से पाकिस्तान माँगा और जब तमाम विकल्पों को तलाशने और खारिज करने की मुश्किल प्रक्रिया से गुजरने के बाद मैंने उनके सामने पाकिस्तान विभाजन का प्रस्ताव रखा, तो वे खामोस और उदास थे ।''** [५०]

इस उपन्यास में पाकिस्तान के उदय से लेकर हिन्दुस्थान के लोकतंत्र की विडम्बना और नेताओं में उत्तरदायित्व के अभाव की भूमिका से निर्मित समस्याओं के वास्तविक रूप को चित्रित किया गया है। जिस के द्वारा कमलेश्वर के ऐतिहासिक अध्ययन की सूक्ष्म दृष्टि का हमें एहसास होता है।

कमलेश्वर की उपन्यास यात्रा में उपर्युक्त उपन्यासों के अलावा 'सुबह-दोपहर-श्याम', 'वही बात' और 'रेगिस्तान' उपन्यास प्रकाशित हुए हैं।

१.२.४ 'नाटक साहित्य और कमलेश्वर' :-

भारतीय दूरदर्शन जैसे सशक्त माध्यम से जुड़े हुए संवाद लेखक से एड़िशनल जनरल डायरेक्टर कमलेश्वर ने भारतीय साहित्य को रंगमंच से जोडने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। इस कार्य के लिए वे हमेशा कार्यरत् रहें हैं। इस दृष्टि से वे एक नाटककार हैं। उनके नाटक 'अधुरी आवाज', 'चारुलता' (रवीन्द्रनाथ ठाकूर के 'नष्ट नीड' का नाट्य रूपांतर), 'खडिया का घेरा', 'बाल-नाटक', 'परिक्रमा', 'लोकमंच', 'दूरदर्शन कल्ब', 'दर्पण' आदि उल्लेखनीय हैं। यहाँ उनके दूरदर्शन के प्रायोजित कार्यक्रमों के लिए पहला साहित्यिक सीरियल अर्थात नाट्य रूपांतर प्रस्तुत है- दर्पण।

अ) 'दर्पण', भारतीय भाषाओं की चुनी हुई कहानियों का नाट्य रूपांतर :-

सिंधी, उर्दू, गुजराती, कन्नड, पंजाबी, मलयालम, बंगला आदि भारतीय भाषाओं से चुनी हुई क्रमशः गलत गतिण, दीमक, चिट्ठी, दहीवाली, भौंसे के सीघोंपर टिकी धरती, आँखे, महानगर और दिल्ली में एक मौत आदि कहानियों को पटकथा के जरिए हिन्दी के माध्यम से पेश करने की चुनौती को उठाया है कमलेश्वर ने। सांस्कृतिक और साहित्यिक धरोहर को हिन्दी के माध्यम से प्रस्तुत किये जाने से 'दर्पण' सीरियल लोकप्रियता के शिखर पर पहुँच गई। इस धारावाहिक की लोकप्रियता ९५ प्रतिशत आँकी गई, इसका श्रेय कमलेश्वर की ओर जाना स्वाभाविक है। इससे संबोधित

कमलेश्वरजी के विचार इस प्रकार है, **"दपर्ण' सीरियल उस लम्बे अभियान का ही नतीजा है, जो सहयोगियों और सहकर्मियों के अनवरत् सहयोग के जरिए तीन वर्ष बाद मेरे माध्यम से स्वरूप ले सका। .... और भारतीय यथार्थ को भारतीय दूरदर्शन पर प्रस्तुत कर सका- वह यथार्थ........ जिससे बिना रीढवाला नौकरीपेशा वर्ग हमेशा करता था।"** [५१]

तेरह कहानियों के दूरदर्शन आलोखों में से इस कृति में मात्र आठ आलेख दिए गए हैं। जो भारतीय भाषाओं के श्रेष्ठ कहानीकारों की कहानियों का हिन्दी नाट्य रूपांतर प्रस्तुत है। जो निःसंदेह प्रशंसनीय ही है।

उपर्युक्त नाट्य संकलन के अलावा 'परिक्रमा' धारावाहिक बम्बई दूरदर्शन से चलाकर कमलेश्वर ने आम लोगों की समस्याओं को वास्तविकता से व्यक्त किया, जिससे 'परिक्रमा' भी दूरदर्शन के इतिहास में महत्त्वपूर्ण सीरियल के रूप में प्रसारित हुई थी।

१.२.५ आकाशवाणी और दूरदर्शन : कमलेश्वर :-

कमलेश्वरजी ने पत्रकारिता के साथ आकाशवाणी और दूरदर्शन में भी कार्य किया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। कमलेश्वर दिल्ली दूरदर्शन में जाने के बजाए आकाशवाणी इलाहाबाद में ही अपने आर्थिक अभाव के कारण 'स्टाफ आर्टिस्ट' के पद पर कुछ दिन काम करते रहे, लेकिन टी.ए.डी.ए. मिलते ही दिल्ली दूरदर्शन में नियुक्त हुए। दूरदर्शन के लिए लगभग ढाई सौ स्क्रिप्टस् का लेखन भी कमलेश्वर ने किया है। दिल्ली दूरदर्शन से आपने समाचार के साथ-विविध कार्यक्रमों का प्रस्तुतिकरण भी किया है। भारतीय दूरदर्शन के इतिहास में पहली फिल्म के निर्माण का श्रेय भी आपको ही दिया जाता है।

"कमलेश्वर ने मुंबई दूरदर्शन से एक साप्ताहिक कार्यक्रम शुरु किया, जिस का लोकप्रिय नाम था- 'परिक्रमा'। इस कार्यक्रम के द्वारा महाराष्ट्र के बुद्धिवादियों को अपने ओर आकर्षित किया। परिक्रमा के माध्यम से सामाजिक सत्य को उन्होंने

उजागर किया है। जैसे-रास्ते पर काम करते हुए मजदूरों का करुणापूर्ण प्रस्तुतिकरण ही नहीं, बल्कि उनकी करूण कथा को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। इस कार्यक्रम के माध्यम से आपने अपनी सामाजिक परिकल्पना को उजागर किया है।" [५२]

कमलेश्वर जी ने दूरदर्शन धारावाहिकों के लिए पटकथा और संवाद लेखन का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। 'दर्पण' यह दूरदर्शन के लिए पहले धारावाहिक का लेखन उन्होंने ही किया है। 'खडिया का घेरा', 'दूरदर्शन कल्ब', 'लोकमंच', 'चन्द्रकान्ता' जैसे कई धारावाहिकों के द्वारा सांस्कृतिक धरोहर को हिन्दी भाषा के द्वारा प्रस्तुत किया है। इस कार्य के लिए अपने दूरदर्शन के गुरू मरौठी के प्रख्यात व्यंग्यकार- एवं नाटककार पु. ल. देशपांडे को मानते हैं।

दूरदर्शन द्वारा प्रसारित 'युग' (सन् १९९७ ई.) धारावाहिक पर आपका ताजा लेखन हम तक पहुँचा है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उम्र के ६५ वे वर्ष भी आप दूरदर्शन जैसे जनसंचार माध्यम से जुडे हुए हैं।

१.२.६ हिन्दी फिल्म और कमलेश्वर :-

हिन्दी फिल्म लेखन में कमलेश्वर एक ऐसे पटकथा एवं संवाद लेखक सिद्ध हुए हैं, जिनपर संदेह करना गलत है। हिन्दी के कई साहित्यकारों ने इस क्षेत्र में प्रवेश किया था, मगर वे इस में टिक नहीं सकें। कमलेश्वर ने लगभग सौ हिन्दी फिल्में लिखकर यह साबित किया कि अभिव्यक्ति के इतने सशक्त माध्यम में भी वे कम नहीं हैं। आपने फिल्मी जगत् में साहित्यकार के नई प्रतिष्ठा का निर्माण किया और सम्मान प्राप्त करा दिया। साथ ही फिल्मों को वैचारिक धरातल के साथ जोडकर नई कलात्मक ऊर्जा का निर्माण किया है।

कमलेश्वर ने अपने साहित्यिक जीवन में जिस तरह संघर्ष किया है, उसी तरह फिल्मी लेखन में भी संघर्ष किया है। भारतीय हिन्दी फिल्मों को परम्परावादी दायरे से हटाकर एक नया आन्दोलन चलाया- समांतर सिनेमा का। इस का उदाहरण है-

उनके 'बदनाम बस्ती' और 'डाक बंगला' फिल्म के कथानक । यह अलग किस्म के अलग दिखाया गया था । जिससे समूचे फिल्म जगत में तहलका मचा और इससे फिल्म निर्माताओं का ध्यान 'समांतर सिनेमा' की ओर आकर्षित हुआ । आगे चलकर 'समांतर सिनेमा' नहीं टिका होगा लेकिन सत्य यह है कि कमलेश्वर के लेखनी में सबको आकर्षित करने की अद्‌भुत क्षमता है ।

'समांतर सिनेमा' आन्दोलन के कारण हिन्दी साहित्य को एक नई दृष्टि से पढ़ा जाने लगा । राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, मन्नु भंडारी आदि साहित्यकारों के साहित्य को कथानकों के लिए चुना गया । साथ ही फिल्म निर्माता गुलजार द्वारा कमलेश्वर के उपन्यास 'काली आँधी' और 'आगामी अतीत' पर आधारित 'आँधी' और 'मौसम' फिल्म का निर्माण हुआ है । **''लेकिन हुआ यह कि पटकथा एवं संवाद लेखन का कार्य कमलश्वरजी ने किया और शीर्षक दिया गया 'रिटिन एंड डायरेक्टेड बाई गुलजार' । एक लेखक के लिए इतना बडा अन्याय भी सहजता से सहने का साहस कमलेश्वरजी ने जताया है ।''** [५३]

उपर्युक्त फिल्मों के अलावा कमलेश्वर ने 'पति-पत्नी और वह', 'अमानुष', 'वही बात', 'घडी के दो हाथ', 'आनंद आश्रम', 'राम-बलराम', 'मृग तृष्णा', 'जैसे कई', 'द बर्निंग ट्रेन' कई सफल फिल्मों के लेखन का कार्य किया हैं ।

१.२.७ समीक्षक कमलेश्वर :-

कमलेश्वर ने साहित्य निर्माण के साथ-साथ समीक्षक का कार्य भी किया है। सम्पादक के रूप में आपने साहित्यिक सुझ-बूझ द्वारा पत्रिकाओं में समीक्षा की है ।

''साथ ही आप पार्टीबद्धता से न जड़े होने के कारण हमेशा सत्य घटनाओं को उद्‌घाटित करते रहे हैं । पार्टीबद्धता से जुड़ी हुई समीक्षा आपको कदापि मान्य नहीं है । यथार्थ से पूर्ण आपके लेख हमें पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ने के लिए मिलते हैं । आपने 'नई कहानी की भूमिका', 'मेरा पन्ना' जैसे समीक्षात्मक पुस्तकें लिखी हैं, जिसमें से 'नई कहानी की भूमिका' को प्रतिनिधिक रूप में लिय गया है ।'' [५४]

१.२.८ यात्रा वृत्त और कमलेश्वर :-

कमलेश्वर बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं । उन्होंने कहानी, उपन्यास के साथ-साथ यात्रा-रिपोतार्ज भी लिखें हैं । यात्रा विवरण में 'खण्डित यात्राएँ' पुस्तक हिन्दी साहित्य में प्रसिद्ध हो चुकी है, तो 'बंगला देश की ड़ायरी' यात्रावृत्त बेजोड़ कृति है । साथ ही 'कश्मीरः रात के बाद' यात्रा-विवरण भी प्रकाशित हुआ है ।

अ) 'कश्मीर : रात के बाद' :-

'कश्मीर : रात के बाद' के दो भाग हैं । प्रथम भाग में लेखक ने हाल ही के वर्षों में की गयी यात्रा को प्रस्तुत किया है, जिसमें कश्मीर की वर्तमान स्थिति का आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक आधारों पर विश्लेषण है । दूसरे भाग में लेखक की अन्य पूर्व यात्राएँ मौजूद हैं, जिसमें 'हम पेशा', 'कमला का सिपाई-भाई और केतकी का फूल', 'जनदेवता आशीर्वाद का भूखा था', 'चलती-फिरती बस्तियाँ और एक महिला मित्र', 'आदमी खुशी खोज लेगा', 'राकेश से मुलाकात और बर्फ के दारिया में साथ-साथ', 'वह बोलता था', 'टुटा हुआ इतिहास और डॉ. 'अशरफ' आदि शीर्षकों के द्वारा यथार्थ स्थिति की वार्ता ली गयी है । कैमरे और कलम की जुगल बंदी से देखा-सोचा गया यह कश्मीर शब्दों में ढला है, कमलेश्वर की निर्भिक कलम से ।

हैदराबाद और जुनागढ़ रियासतें तो भारत में विलिन हो गए, लेकिन रहा कश्मीर । कश्मीर के भारत में सम्मिलित होने के इतिहास से आज तक बने सवालों को दस्तावेज ही यह यात्रा-वृत्त है ।

साथ-साथ इस यात्रावृत्त में कश्मीर में गुजारे दिनों के अनुभव और वहाँ के विद्वत जनों से किये हुए वार्तालाप को और उनकी इच्छा-आकांक्षा को इस में व्यक्त किया है । पाकिस्तान द्वारा किये जानेवाले अत्याचार, आतंकवादियों के डर से कश्मीरी लोगों की बनी हुयी मानसिकता को इसमें प्रभावी शैली से व्यक्त किया गया है । एक उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है, **''जलती आग और खौलते पानी का खतरनाक खेल कश्मीर**

में लगातार जारी है। इसके पीछे पाकिस्तान का हाथ है, यह तो प्रामाणिक है ही, पर साथ ही इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि कश्मीर के संवेदनशील और समझदार लोगों के दिल में गुस्सा नहीं है।'' [५६] कश्मीर के दहशत गर्दो के साथ-साथ वहाँ के वर्तमान स्थिति के कारणों पर भी गंभीरता पूर्वक अपना दृष्टिकोन स्पष्ट किया है।

ज्ञानपीठ का केन्द्र और सूफी संतों का कश्मीर कुछ स्वार्थी तत्वों और विश्व में अस्थिरता पैदा करनेवाली ताकदों के कारण कल क्या था और आज क्या हो गया। भारतीय स्वाधीनता और देश विभाजन से निर्मित कश्मीरियों की समस्याओं के साथ राजनीतिक, सामाजिक और सार्वजनिक जीवन की समस्याओं की मर्मीतक पीडा को अभिव्यक्त किया है। इस दृष्टि से कमलेश्वर की यह कृति निःसंदेह महत्त्वपूर्ण एवं अनूठी है।

१.२.९ संस्मरण और कमलेश्वर :-

कमलेश्वर ने अपने कर्मरत जीवन में हमेशा संघर्ष किया है। उनकी हर कृति साहित्य में विवाद का विषय बन चुकी है। ऐसी स्थिति में हमेशा उन्होंने अपनी रचना की सफाई दी है - और कहा जाता है कि सत्य हमेशा कडुआ होता है। ऐसे ही अपने समकालीन लेखकों के विषय को लेकर लिखा गया संस्मरण है, 'अपनी निगाह में'।

अ) 'अपनी निगाह में' :-

'अपनी निगाह में' कमलेश्वर का एक ही संस्मरण है, जिसमें अपनी नजर और नजरिये से विशिष्ट साहित्यकारों के व्यक्तित्व और साथ ही कृतित्व को गहराई और पैनपन के साथ चित्रित किया गया है। अपने अनुभव एवं स्मृति के आधार पर गंभीरता पूर्वक विचारों से समवर्ती साहित्यकारों के विषय में लिखा गया है। साहित्यकार कमलेश्वर की निगाह में अपनी सहवर्ती साहित्यकार के व्यक्तित्व के साथ

ही साहित्यिक आयाम को व्यक्त किया गया है। स्वयं कमलेश्वर के शब्दों में श्रीकांत वर्मा पर लिखे गये विचार यहाँ दृष्टव्य है, "**यह सन् १९५४-५५ ई. कि बात है। श्रीकांत जब बिलासपुर से 'नई दिशा' पत्रिका निकालने की तैयारी में थे। यही वे वर्ष भी है जब 'नई कहानी' अपने ऐतिहासिक रचना अभियान पर निकल चुकी थी। और इलाहाबाद इसका केन्द्र था। श्रीकांत मूलतः कवि थे, पर उनकी दृष्टि कविता और कहानी यानी साहित्य को रचनात्मकता को विभाजित करके नहीं देखती थी। यह बडी बात इसलिए थी कि बिलासपूर जैसे कस्बे में ऐसी व्यापक दृष्टि का होना थोडा चमत्कृत करता था।**" [५७] इस तरह से कमलेश्वर ने अपने समकालीन रचनाकारों को साहित्यिक नजरिया और रचना धर्मिता में उनके सहयोग को स्पष्ट किया है।

१.२.१० कमलेश्वर का आत्मकथा साहित्य :-

साहित्य की अन्य विधाओं के समान कमलेश्वर जी ने आत्मकथा साहित्य का भा सृजन किया है। कमलेश्वर की आत्मकथा अबतक तीन खण्डों में प्रकाशित हो चुकी है, जिसे उन्होंने आधारशिलाएँ कहा है। इन आधारशिलाओं का सामान्य परिचय निम्नांकित शीर्षक द्वारा दिया जा रहा है।

अ) 'जो मैंने जिया' :-

'जो मैंने जिया' कमलेश्वर की आत्मकथा की पहली आधारशिला है- जिसमें अपने साहित्यिक जन्म से लेकर जीवनानुभवों के विविध पक्षों को कमलेश्वरने उद्घाटित किया है। इलाहाबाद वाले दिन, आकाशवाणी से जुडे सन्दर्भ, दूरदर्शन के अनुभवों के साथ-साथ आजादी आन्दोलन, कहानी से कहानी आन्दोलन और तीन कहानिकारों के साथ सहवर्ती कहानीकार और सम्पादकी के अनुभवों को वास्तविकता से लिखा गया है।

यहाँ मुखपृष्ठ के कुछ विचार रखना उचित है - ''**अपनी मौलिक सूझ बूझ और नजरिये को लेकर लगातार चर्चित तथा विवादास्पद रहनेवाले कमलेश्वर की यादें रोचक भी हैं और पाठकों को अपने साथ अतीत व भविष्य में बहा ले जाने का माद्दा भी रखती हैं। उम्र की एक खास दहलीज पर पैर रखते ही आदमी को अचानक बीते दिन घेरने लगते हैं और बेतहाशा याद आने लगते हैं - वक्त की पिछली गलियों, मोडों, चौराहों पर पीछे छूट गये लोग।.... और इन यादों के झरोखे से देखायी देती है एक पूरी दुनिया हलचलों, दोस्ती-दुश्मनी, आधी शताब्दी के अनेक छोटे-बडे साहित्यिक कारनामों और इतिहास प्रसंगों से भरी-पूरी दुनिया। 'जो मैंने जिया' में कमलेश्वर की इसी दुनिया का चित्रण है।**'' [५८] प्रस्तुत कृति में कथाकार कमलेश्वर के जीवन परक संस्मरण है, जो वास्तव में विचार किया जाए तो वे हैं साहित्यिक यात्रा के दस्तावेज।

आ) 'यादों के चिराग' :-

'जो मैंने जिया' के बाद प्रकाशित कमलेश्वर की आत्मकथा का दूसरा खण्ड है- 'यादों के चिराग'। इस कृति में कमलेश्वर के फिल्मी दुनिया के अनुभवों के साथ भिवंडी दंगों का वर्णन, सहवर्ती साहित्यकार और लेखिकाओं के विषय के साथ-साथ पत्रकारिता के अनुभवों को व्यक्त किया गया है। साथ ही लेखक कमलेश्वर ने यह दावा किया है कि, ''**यह नितांत आत्मीय और अंतरंग संस्मरणों का लेखा-जोखा है। इसमें किसी को भी बख्शा नहीं गया हैं, न स्वयं को और न ही सम्बन्धित पात्रों कों, बेबाकी, स्पष्टवादिता और पूर्ण ईमानदारी बरती गई है।**'' [५९] अर्थात इस कृति में गूढ रहस्यों को अभिव्यक्त किया गया है।

'यादों के चिराग' कमलेश्वर के शब्दों में ढली एक ऐसी आधारशिला है, जिसमें 'नई कहानी' के सफ़रनामा एवं यात्रा के द्वारा सम्बन्धित लेखकों को निकट से जानने पहचानने से वास्तविक स्थिति का पता हमें लगता है। जो हिन्दी कहानी के क्रमिक विकास को जानने के लिए महत्त्वपूर्ण है।

इ) 'जलती हुई नदी' :-

'जलती हुई नदी' कमलेश्वर की आत्मकथा का तीसरा खण्ड है। आत्मकथा के इस खण्ड में कमलेश्वर की मुम्बई यात्रा से दिल्ली दूरदर्शन के एडीशनल डायरेक्टर जनरल (सन १९८० ई.) पद पर आसीन होने तक की चर्चा स्पष्ट रूप से की गई है। मुम्बई आने से पहले वे साहित्य सृजन के साथ पत्रकारिता से जुड गये थे। लेकिन मुम्बई आने पर वे पत्रकारिता (मुख्यतः सारिका के सम्पादक), दूरदर्शन, फिल्म, सामाजिक-धार्मिक आन्दोलनों के साथ सक्रिय होते हुए साहित्यिक सृजन करते रहे। इससे यह स्पष्ट होता है कि उनके कार्यक्षेत्र का विस्तार ही नहीं हुआ, बल्कि उसमें विविधता भी आयी है। मुम्बई के अनुभवों ने आपके व्यक्तित्व को बहुआयामी बनाया है और कई क्षेत्रों के स्त्री-पुरुषों को आकर्षित किया हैं।

आत्मकथा के इस खण्ड में सारिका के सम्पादन के रूप में विशेषतः साहित्य के सन्दर्भ में आनी सक्रियता की चर्चा की है। साथ ही वामपंथी विचारधारा, टाइम्स ऑफ इंडिया ग्रुप, समांतर आन्दोलन, मराठी के दलित साहित्य, बोहरा मुसलमानों के धर्मगुरु का प्रसंग, अज्ञेय और नामवरसिंह के प्रति कटुतापूर्ण विचार, मुम्बई दूरदर्शन के 'परिक्रमा' कार्यक्रम की चर्चा, खतवाली की कहानी, डॉ. धर्मवीर भारती के विषय में.....देशी सेठ प्रकरण, साथ ही फिल्मी दुनिया के रहस्योद्घाटन आदि मुद्दों पर इस खण्ड में विस्तार से लिखा गया है।

''कमलेश्वर ने आत्मकथा के इस खण्ड में अपने साहित्य सृजन की चर्चा बहुत ही कम की है। एकाध बार किसी महत्त्वपूर्ण कहानी की रचना और उसके सृजन प्रेरणा को लिखा गया है। लेकिन आत्मकथा का यह खण्ड अत्यंत रोचक और पठनीय है। कमलेश्वर की अनुभव यात्रा पाठकों को पढ़ने के लिए मजबूर करती है। कई जगह काव्यात्मकता के साथ उक्ति चमत्कार हैं, जो उनकी आकर्षक शैली को स्पष्ट करती हैं।'' [६०]

१.२.११ हिन्दी पत्रकारिता में कमलेश्वर :-

कमलेश्वर जी जनसंचार माध्यमों से हमेशा जुडे रहे हैं । नभोवाणी, दूरदर्शन, हिन्दी फिल्मों के साथ-साथ पत्रकार तथा सम्पादक के रूप में आपने कार्य किया है । हिन्दी पत्रकारिता से जुडे अनुभवों में 'समाज कल्याण' बोर्ड के सम्पादक महावीर अधिकारी प्रसंग आपके विचारों की निर्भिकता को स्पष्ट करता है ।

डॉ. अनिलकुमार जी उपाध्याय के शब्दों में यहाँ प्रस्तुत है, **''देर शाम महावीर अधिकारी से मिलने रंगमहल होटल दरियागंज पहुँचा । वे उसी होटल में रहते थे । वे व्यस्त थे । साथ में उनके दोस्त और गीतकार रामावतार त्यागी भी व्यस्त थे । कमरा भी व्यस्त था ।''** [६१] परम्परा और आधुनिकता के संयोग से श्रेष्ठ पत्रकारिता को संजोनेवाले सम्पादक महावीर अधिकारी के इस अनैतिक और घीनौने व्यवहार की धज्जियाँ उडाने का काम कमलेश्वर एक पत्रकार की और सम्पादक की हैसीयत से ही कर सके हैं । फिर कमलेश्वर 'नई कहानियाँ' के सम्पादक बने जिससे आप पत्रकारिता की ओर आकर्षित होकर सारिका, गंगा और आज के 'भास्कर' तक पत्रिकाओं को सम्पादित करते रहे हैं । साथ ही आपके लेखन से बने विवादों को अनुभवों को, इस कृति में व्यक्त किया है ।

इस तरह कमलेश्वर जी ने स्वयं के लेखन से सम्बन्धित अनुभवों को रोचकता से अभिव्यक्त किया है । जिसमें हिन्दी साहित्य की अनभिज्ञता से आज तक के अनुभवों को साहित्यिक यात्रा के रूप में स्पष्ट किया गया है ।

पहला अध्याय

संदर्भ संकेत

क्र.सं.	कृति का नाम	लेखक/लेखिका/संपा.	पृष्ठ
०१	अपनी निगाह में	कमलेश्वर	५५
०२	गर्दिश के दिन	कमलेश्वर	१५५
०३	कमलेश्वर	मधुकरसिंह, लेख	८७
		कमलेश्वर दुष्यंतकुमार की निगाह में	
०४	संडे मेल पत्रिका,	अंक २८ जनवरी	
		१९९० संस्मरण आधारशिलाएँ	
०५	समकालीन सहित्य समाचार	(जनवरी १९९७)	
०६	कमलेश्वर	मधुकरसिंह (विभिन्न	
		लेखकों की कलम से उद्धृत)	
०७	कमलेश्वर	मधुकरसिंह	३५७
०८	कमलेश्वर	कमलेश्वर:मधुकरसिंह	८७
०९	कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ	राजेन्द्र यादव के मेरे	
		हमदम मेरा दोस्त	
		परिचय नामा	०९
१०	कमलेश्वर	मधुकरसिंह (संपादक)	९७
		अरविन्दकुमार के लेख से उद्धृत	
११	संडे मेल पत्रिका	(हिन्दी संस्करण, दिल्ली)	
		अंक ११ ,फरवरी १९९०	
१२	संडे मेल पत्रिका,	अंक ३ जनवरी १९९०	
१३	कमलेश्वर	मधुकरसिंह (संपादन)	९७

१४	कमलेश्वर	मधुकरसिंह (संपादन)	३६६
१५	कमलेश्वर	लेख शौरी राजन	३८९
१६	कमलेश्वर	मधुकरसिंह	९१
१७	वही	वही	वही
१८	कमलेश्वर	मधुकरसिंह	२६५
१९	संडे मेल पत्रिका, अंक जनवरी १९९०, आधारशिलाएँ संस्मरण		
२०	वही		
२१	कमलेश्वर:व्यक्ति, व्यक्तित्व, परिवेश एवं रचना संसार	डॉ. मंजुला देसाई	२२
२२	अपनी निगाह में	कमलेश्वर	६८
२३	वही	वही	वही
२४	मेरी प्रिय कहानियाँ	कमलेश्वर	०७
२५	अपनी निगाह में	कमलेश्वर (लेखक कमलेश्वर: दुष्यंतकुमार की नजरमें)	७९
२६	राजा निरबंसिया	कमलेश्वर	०८
२७	अपनी निगाह में	कमलेश्वर	७०
२८	संडे मेल पत्रिका, अंक ११ फरवरी १९९०		१०
२९	हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ	शिवकुमार शर्मा	६४८
३०	कहानीकार कमलेश्वर : संदर्भ एवं प्रकृति	डॉ. सु. मा. रणसुभे	१०५
३१	समकालीन साहित्य समाचार, जुलाई १९९४	कमलेश्वर	१४
३२	कमलेश्वर	मधुकरसिंह (संपादक)	१२३,१२४
३३	वही	वही	वही
३४	कस्बे का आदमी	कमलेश्वर:भूमिका से	

३५	समकालीन साहित्य समाचार, जुलाई १९९४	कमलेश्वर	१४
३६	हिन्दी के बहुचर्चित उपन्यास और उपन्यासकार	डॉ. अमर प्रसाद जायसवाल	३७
३७	हिन्दी लघु उपन्यास	घनश्याम मधुप	१६०
३८	हिन्दी लघु उपन्यास	नरेन्द्र चतुर्वेदी	१३५
३९	हिन्दी लघु उपन्यास	डॉ. अमर प्रसाद जायसवाल	२३९
४०	लौटे हुए मुसाफिर	कमलेश्वर	१०९
४१	हिन्दी उपन्यास : विविध आयाम	डॉ. रणसुभे होलीकर, डॉ. सोनवणे	१४३
४२	साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास	डॉ. धारूकान्त देसाई	४८
४३	मेरी प्रिय कहानियाँ	कमलेश्वर	१२
४४	तीसरा आदमी	कमलेश्वर	भूमिका से
४५	कमलेश्वर का कथा साहित्य	मधुकरसिंह	२००
४६	वही	वही	वही
४७	साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास	डॉ. धारूकान्त देसाई	१४१
४८	आगामी अतीत	कमलेश्वर	९६
४९	समकालीन साहित्य समाचार, (अगस्त १९९८)	सं. सत्यव्रत	३३
५०	कितने पाकिस्तान	कमलेश्वर	३६२
५१	वही	वही	वही
५२	समकालीन साहित्य समाचार (अगस्त १९९७)	कमलेश्वर	३३

५३	समकालीन साहित्य समाचार (जुलाई १९९४)	कमलेश्वर	१४
५४	दर्पण	कमलेश्वर	भूमिकासे
५५	भाषा (सितम्बर-अक्तू.सन २००० ई.)	पवन चौधरी मनमौजी	
५६	समकालीन साहित्य समाचार (जनवरी १९९७)	सं. सत्यव्रत	३४
५७	नई कहानी की भूमिका	कमलेश्वर	(प्राक्कथन से)
५८	समकालीन साहित्य समाचार (अगस्त १९९७)	कमलेश्वर	३३
५९	जो मैनें जिया	कमलेश्वर- मुखपृष्ठ से	
६०	यादों के चिराग	कमलेश्वर- आमुख से	
६१	नई कहानी के भूमिका से	कमलेश्वर	(प्राक्कथन से)

- - -ooo- - -